तिब्बत, दलाई लामा और पुनर्जन्म की भू-राजनीति

Tibet Justice Center

INTERNATIONAL TIBET NETWORK

विषयवस्तु

सारांशः पुनर्जन्म और चीन की कार्यनीतिक उद्देश्य 3

मुख्य निष्कर्षः 5

'दलाई लामा के बाद का युग' में तिब्बत के लिए वैश्विक समर्थन समाप्त करने के लिए चीन की योजना की रूपरेखा 6

14वें दलाई लामा की स्थिति 7

उत्तराधिकार के लिए धर्मशाला की रूपरेखा 8

कहाँ और क्यों? 9

पेंचन लामा का उद्धरण 10

पुनर्जन्म के संबंध में चीन की नई रणनीतियाँ 13

चीन द्वारा पुनः अवतार के लिए बनाई गई नई रणनीतियों में शामिल हैंः 15

प्रशिक्षण कार्यक्रम: पार्टी के हस्तक्षेप को उचित ठहराने का उपागम 15

वह अधिकारी गण जिन्होंने चीन जनवादी गणराज्य में 15वें दलाई लामा की पहचान की थी। 16

तिब्बती बौद्ध धर्म पर रणनीतिक नियंत्रण 16

''चीनी विचारधारा' का प्रक्षेपण संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र और इससे बाहर 17

तिब्बती बौद्ध धर्म के अस्तित्व और दलाई लामा के उत्तराधिकार में मंगोलिया की भूमिका 19

दलाई लामा को कम आंकने का प्रयास चीन समर्थक समूह द्वारा 20

नेपाल में सुरक्षा दिया जाना 21

अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया उत्पन्न करना 22

विभिन्न सरकारों को सिफारिशें 24

परिशिष्ट 25

क्रियाविधि 27

Notes 28

सारांशः पुनर्जन्म और चीन की कार्यनीतिक उद्देश्य

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सी.सी.पी) पुनर्जन्म के तिब्बती बौद्ध धर्म की प्रथा को 14वें धर्म गुरू दलाई लामा युग का अनुपालन करने की बाध्यता संबंधी वृहद योजनाओं को थोपने के कार्य में तेज गति से आगे बढ़ा रही है।

सातवीं शताब्दी में तिब्बत में पुनर्जन्म की शुरुआत के बाद से ही बौद्ध धर्म ने मौलिक रूप से तिब्बती सभ्यता को आकार दिया है और आज यह तिब्बती जीवन और सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान का अभिन्न अंग है।

बौद्ध धर्म की परंपरा को षाष्वत बनाए रखने के क्रम में तिब्बत के लोगों ने आध्यात्मिक गुरुओं के पुनर्जन्म (या तुल्कु) को मान्यता प्रदान करने की एक अनूठी प्रणाली विकसित की है; जो करुणाभाव विकसित करने और सभी संवेदनशील प्राणियों की मदद के लिए समर्पित हैं। 17वीं शताब्दी में पाँचवें दलाई लामा के नेतृत्व के समय से पुनर्जन्म लेने वाले लामा तिब्बत की बौद्ध धर्म की सत्ता के मूल मुखिया बन गये, जो ना केवल धार्मिक है बल्कि राजनीतिक प्राधिकारी भी रहे हैं।

14वें दलाई लामा के नेतृत्व में तिब्बत की बौद्ध सभ्यता और अधिक सुदृढ़ किया हुई है। साथ ही उनके नेतृत्व में तिब्बत के सभी बौद्ध सम्प्रदाय के तिब्बतियों को एक सूत्र में पिरोने के साथ-साथ तिब्बती प्रदेशों को एक साथ जोड़ा और दुनियाभर में तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

आज, 14वें दलाई लामा का आध्यात्मिक प्राधिकार नेपाल, लद्दाख, सिक्किम और भूटान सहित हिमालयी क्षेत्रों और पारंपरागत रूप से बौद्ध धर्म के अनुयायी देश जैसे जापान, वियतनाम और म्यांमार तथा तुवा प्रान्त, काल्माइकिया और बुरयातिया के मध्य एशियाई रूसी गणराज्य में फैला हुआ है। इसमें 14वें दलाई लामा का गृह-भारत और मंगोलिया सबसे बड़ा स्वतंत्र देश हैं जहाँ दुनिया में बहुसंख्यक तिब्बती बौद्ध जनसंख्या है, भी शामिल है। दलाई लामा की पहुंच पश्चिमी देशों तक और समस्त चीन जनवादी गणराज्य में फैली हुई है, जहां बहुत से चीनी, तिब्बती धर्म गुरूओं के प्रति समर्पित हैं।

तिब्बती धार्मिक अस्मिता के केंद्र में मामलों को विनियोग और नियंत्रित करने के लिए बीजिंग का संघर्ष तिब्बत में पूर्ण नियंत्रण हासिल करने और अपनी सीमाओं से बाहर अपने प्रभुत्व स्थापित करने के उद्देश्य से उभरा है।

इन राजनीतिक और धार्मिक ताकतों ने एक गहन भू-राजनीतिक परिदृश्य जो कम्युनिस्ट पार्टी को अगले दलाई लामा के स्वीकृत प्रधान (फिगरहेड) के रूप में स्थापित करने की व्यापक योजना के साथ-साथ तिब्बत में और चीन के जनवादी गणराज्य के बाहर इसके संभावित प्रभाव को स्थापित करना दोनों शामिल थे।

सन् 1954 में, माओ जेदुंग ने युवा दलाई लामा से जो बात कही थी, कि "धर्म विष है" वह बहुत ही प्रचलित हुई। सन् 1949/50 में तिब्बत पर चीन के आक्रमण के बाद से ही हजारों बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया है, बड़ी चिताओं पर धार्मिक ग्रंथों को जलाया है, धार्मिक गुरूओं को प्रताड़ित किया है, और उन्हें "देशभक्ति की पुनःशिक्षा" और "कठिन श्रम" से गुजरने के लिए मजबूर किया है। चीन तिब्बत में धार्मिक संरचनाओं को विध्वंस करके, बौद्ध भिक्षुओं पर वैचारिक शिक्षा को थोप करके, और दलाई लामा को "अलगाववादी" और "बौद्ध भिक्षु के वेश में भेड़िया" की संज्ञा देकर उनके खिलाफ अपने जहरीले अभियानों को जारी रखते हुए तिब्बत में तिब्बती बौद्ध धर्म को निरंतर नष्ट करने पर तुला हुआ है।[1]

चीनी सरकार के इन सभी कृत्यों को देखते हुए, यह उम्मीद की जा सकती है कि बीजिंग दलाई लामा की संस्था को पूर्णतः समाप्त कर देगा।

हालाँकि, चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी (सी.सी.पी.) ने तिब्बती बौद्ध धर्म के पुनर्जन्म प्रणाली पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए रणनीति विकसित की है। इस रणनीति में इस बात पर बल दिया जाता है कि अगले दलाई लामा को मान्यता देना चीन का विशेषाधिकार रहेगा, और इसका अभिकल्प न केवल तिब्बतियों बल्कि व्यापक अंतरराष्ट्रीय समुदाय को तिब्बत में प्राधिकार और प्रभुत्व को कायम करने के साधन के रूप में लक्षित करने और समस्त तिब्बती बौद्ध जगत में अपना प्रभुत्व जमाना होगा।

बीजिंग का पुनर्जन्म की प्रणाली को उचित ठहराना और नियंत्रित करने संबंधी संघर्ष तिब्बत की धार्मिक अस्मिता की आत्मा पर चोट करना है। 'पुनर्जन्म' तिब्बती बौद्ध धर्म मान्यता और प्रथा का मूल तत्व है जो जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र की अवधारणा के मूल में निहित है।

तिब्बत में, बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म का सिद्धांत एक विशिष्ट प्रकार की प्रथा के रूप में विकसित हुई जिसमें किसी आध्यात्मिक गुरू विशेष के पुनर्जन्म की श्रंखला को मान्यता दी गई है। दलाई लामा एक ऐसे ही अवतार हैं जिनकी उत्पत्ति 14वीं सदी में हुई थी। वर्तमान दलाई लामा अपने वंश परंपरा के 14वें अवतार हैं और वे विश्व के सबसे सम्मानित नैतिक और धार्मिक नेताओं में से एक हैं।

जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती जा रही है, तिब्बतियों को भविष्य के बारे में सोचकर बहुत अधिक दुश्चिंता होती है और उनके सामने कई प्रश्न उपस्थित होते जा रहे हैं कि उनका अगला उत्तराधिकारी कौन होगा?

वर्ष 2011 में, इन सभी संभावित परिणामों के बारे में चिंतन के पश्चात, 14वें दलाई लामा ने अपने उत्तराधिकार से संबंधित एक लिखित दस्तावेज जारी किया, जिसमें अन्य कई बातों के अलावा, उन्होंने कहा कि वे अपने जीवनकाल में ही किसी व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त कर सकते हैं,[2] ऐतिहासिक दृष्टि से इस प्रथा की जड़ें काफी गहरी हैं। चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी ने इस दस्तावेज को यह कहकर खारिज कर दिया कि "केवल बीजिंग ही उनके उत्तराधिकारी को मंजूरी दे सकता है।"

तिब्बती बौद्ध धर्म के चीन के प्रतिमानों का 'आत्मसातीकरण' (Sinicisation) और पुनर्जन्म की प्रणाली में इसके हस्तक्षेप के दूरगामी प्रभाव होंगे और इसका आशय अंततः तिब्बती अस्मिता को तोड़ना और पुनः नया चीनी रूप देना। चीनी प्रभाव में तिब्बती बौद्ध धर्म का उद्देश्य तिब्बती लोगों को दलाई लामा के साथ गहन संबंधों को तोड़ना है और इसमें उच्च तकनीक निगरानी द्वारा बौद्ध मठों और भिक्षुणी विहारों पर निरंतर नियंत्रण बनाए रखने की अन्यायपूर्ण और पीड़ादायी प्रणाली शामिल है। हजारों की संख्या में बौद्ध भिक्षुओं और बौद्ध भिक्षुणियों को धार्मिक संस्थाओं से निष्कासित कर दिया गया है, और कुछेक को चरमपंथी 'देशभक्ति' और 'पुनर्शिक्षा' अभियानों के अधीन हैं जिनमें यातना, प्रताड़ना और लैंगिक उत्पीड़न भी शामिल है।

तिब्बत में चीन की नीतियां पुनर्जन्म के बारे में 'स्वामित्व कायम करने' (वेईविन) की धारणा पर आधारित है, जो 'दीर्घकालिक स्थायित्व' के लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए राजनीतिक प्रेयोक्ति के रूप में लिया गया जिससे चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी के समक्ष आने वाले विरोध और संयमित मतों को कुचला जा सके और पार्टी राज्य का अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।[3]

अधिकारिक रूप से तिब्बती धार्मिक गुरूओं के पुनर्जन्म और विशेष रूप से दलाई लामा के उत्तराधिकार की व्याख्या "स्थायित्व को अक्षुण्ण बनाए रखने" के लिए "प्रमुख राजनीतिक संघर्ष" के रूप में वर्णित किया गया है। अप्रैल 2020 में, फ्लोका सिटी, ई-त्सांग (चीनीः शन्नान, तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र) में पार्टी समिति के उप सचिव लियु झिकिआंग ने "14वें दलाई लामा की मृत्यु और पुनर्जन्म के प्रमुख राजनीतिक संघर्षों और संबंधित तथ्यों पर बल देने"[4] का आदेश दिया ताकि स्थायित्व बना रहे।

चीन की दृष्टि में धार्मिक आस्था ही तिब्बत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक है, जो तिब्बती लोगों को उनकी गहरी आध्यात्मिक प्रथाओं और धार्मिक आस्थाओं, की वजह से विफलता की उलझनों में फंसा रहे हैं। विशेष रूप से दलाई लामा के प्रति उनकी निष्ठा को दूर करने में चीन को बहुत अधिक कठिनाई हो रही है।

इस रिपोर्ट में चीन द्वारा तिब्बती बौद्ध धर्म को "चीनी स्वरूप में ढालने" और दलाई लामा के उत्तराधिकार को नियंत्रित करने संबंधी प्रयास को चीन की योजना के भू-राजनीतिक निहितार्थों को रेखांकित किया गया है।

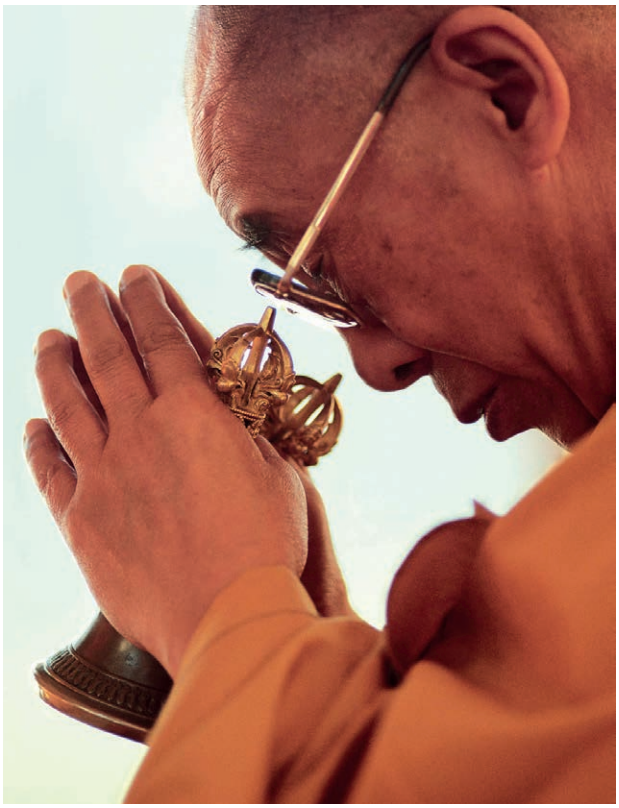

महामहिम 14वें दलाई लामा © Manuel Bauer / Agentur Focus

मुख्य निष्कर्षः

- हाल ही में उद्भाषित, आंतरिक सी.सी.पी. की ब्रीफिंग से उजागर हुआ है कि बीजिंग ने तिब्बत के पक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का अंत करने की योजना के संदर्भ में पश्चिमी देशों की सरकारों और विभिन्न मीडिया घराने को लक्षित करने वाली एक जनसंपर्क रणनीति बनाई है जिसमें उन्होंने 'उत्तर दलाई युग' (Post Dalai Era) की संज्ञा दी है। इस योजना के एक भाग के रूप में उनका अपने स्वयं का दलाई लामा का उम्मीदवार स्थापित करना शामिल है।
- दलाई लामा तिब्बती लोगों के लिए सर्वाधिक धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष व्यक्तित्व हैं और यह तिब्बत और तिब्बती बौद्ध धर्म के भविष्य हेतु केन्द्र बिन्दु हैं। दलाई लामा की संस्था वैधता और आध्यात्मिक अधिकार रखती है – भारतीय और नेपाल स्थित हिमालयी क्षेत्र, मध्य एशिया और मंगोलिया तथा चीन में, बौद्ध धर्म के अनुयायी व बौद्ध धर्मावलंबी भारी संख्या में तिब्बती बौद्ध धर्म का अनुपालन करती है।
- चीनीकरण (Sinicisation) के चरमपंथियों जैसे उपायों के साथ चीन का लक्ष्य तिब्बत पर अपेक्षाकृत और अधिक सतत नियंत्रण सुनिश्चित करना है।
- चीन, तिब्बती बौद्ध पुनर्वतार को तिब्बत में अपना अधिकार हासिल करने की एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में देखता है जिससे तिब्बत की भाषाई , सांस्कृतिक और धार्मिक अस्मिता को खत्म किया जा सके तथा समस्त बौद्ध जगत में अपना प्रभाव और प्रभुत्व कायम किया जा सके। सन् 1995 में बीजिंग ने एक तिब्बती युवा बालक, गेधुन चुइकी नीमा जिसे दलाई लामा द्वारा 11वें पेंचन लामा के रूप में मान्यता दी थी। उनका गायब हो जाना और उसकी जगह अपने प्रत्याशी ग्यालत्सेन नोर्बू का प्रतिष्ठापन कर एक पूर्वोदाहरण निर्धारित किया गया था।
- तिब्बती बौद्ध धर्म को नियंत्रित करने संबंधी चीन के प्रयास भारत, मंगोलिया के साथ-साथ भूटान, नेपाल और मध्य एशिया तक फैले हुए हैं।
- चीन ने पर्यवासित आध्यात्मिक गुरू के प्रति लोगों की विद्यमान निष्ठा को तोड़ने के उद्देश्य से न केवल भिक्षुओं और भिक्षुणियों को बल्कि स्थानीय स्तर पर तिब्बतियों को भी निशाना बनाते हुए राजनीतिक शिक्षा और अपने रंग में ढालने के लिए विशिष्ट शिक्षा देने के प्रयासों को मजबूत किया है। वहीं दूसरी ओर ऐसा पाया गया है कि तिब्बती पर्यवासित समुदायों, विशेष रूप से धर्मशाला में लामाओं के पुनःअवतरण की पहचान के बारे में संप्रेषण करते पर वे उत्पीड़न, कारावास और यहाँ तक कि मृत्यु तक का जोखिम मोल लेते हैं।[5]
- शि-जिनपिंग के 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' से जुड़े तिब्बती बौद्ध मंचों का आयोजन तिब्बती बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने तथा भू-क्षेत्र से बाहर अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए किया जाता है।
- 14वें दलाई लामा ने पुष्टि की है कि:
  - भविष्य के किसी भी पुनर्जन्म पर उनका एकमात्र वैध अधिकार है।
  - यदि उन्हें पुनर्जन्म लेना है, तो वह चीन जनवादी गणराज्य के बाहर एक स्वतंत्र देश में होगा।
  - यह हिमालय क्षेत्रों और मंगोलिया में फैले हुए बौद्ध धर्म के अनुयायियों और तिब्बती लोगों के ऊपर निर्भर है कि वे इस संबंध में निश्चय करें कि दलाई लामा संस्था जारी रहनी चाहिए अथवा नहीं।
  - किसी वयस्क व्यक्ति को उसके उत्तराधिकारी के रूप में चुना जा सकता है।
  - किसी महिला को सदियों पुरानी परंपरा से पृथक होकर एक उत्तराधिकारी के रूप में पहचान दी जा सकती है।
  - तिब्बती धार्मिक प्रधानों और अन्य व्यक्तियों के साथ गहन परामर्श के पश्चात् ही इस संबंध में निर्णय लिया जाएगा कि जब दलाई लामा वर्ष 2025 में 90 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेंगे।

'दलाई लामा के बाद का युग' में तिब्बत के लिए वैश्विक समर्थन समाप्त करने के लिए चीन की योजना की रूपरेखा

चीन का नेतृत्व तिब्बत और इसके भविष्य में दलाई लामा की केन्द्रीयता को समझता है, और बीजिंग का आक्रामक निर्णय तिब्बत के ऊपर वहां पर स्थायित्व को बरकरार रखने की अपनी योजना को लेकर दुश्चिंता से पोषित होता है।

जैसाकि पूर्व में कभी नहीं हुआ था, पी.आर.सी. से संपर्क कर कुशल तिब्बती शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त प्रभावशाली चीनी नीति संबंधी दस्तावेजों[6] से पता चलता है कि चीनी सरकार दलाई लामा के बाद के युग (Post Dalai Era) के लिए विस्तृत तैयारियां करने में जुटी हैं। 'पोस्ट दलाई एरा' एक चीनी शब्द है जिसे दलाई लामा के निधन के अवसर का लाभ उठाते हुए उनका उत्तराधिकारी चुनने संबंधी चीन की योजनाओं को संप्रेषित करने के लिए अंगीकार किया गया है।

एक दस्तावेज में 'लेट दलाई लामा' लिखा गया है कि जब दलाई लामा जीवित हैं और राजनीतिक सत्ता निर्वासन में तिब्बती सरकार[7] में निहित है, और दलाई लामा के बाद का युग अर्थात 'पोस्ट (और आफ्टर) दलाई एरा', जो दलाई लामा के निधन[8] के बाद की अवधि से संबंधित है, दोनों के मध्य स्पष्ट विभेद किया गया है।

पत्रों से उजागर होता है कि चीन की उभरती हुई रणनीति यह हैं कि दुनियाभर का सर्वाधिक प्रिय और सर्वाधिक श्रद्धेय आध्यात्मिक गुरूओं में से एक तिब्बत की नीति का पुनर्विन्यास करने और इसके पक्ष में अंतरराष्ट्रीय समर्थन को समाप्त करने के लिए बीजिंग के लिए एक 'रणनीतिक' और 'ऐतिहासिक' अवसर प्रस्तुत करेगा।

पार्टी द्वारा संचालित संस्थाओं के चीनी विद्वतजनों द्वारा लिखे गए पत्रों में, स्वीकार करते हैं कि वैश्विक मंच को प्रभावित करने के प्रयास आज की तारीख तक असंतोषजनक रहा है क्योंकि वैश्विक मंच पर पर दलाई लामा और तिब्बत का पक्ष बहुत ही प्रबल है।

इन शोध पत्रों से चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी (सी.सी.पी.) की असुरक्षा और इनकी स्थिति के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है क्योंकि इसके फलस्वरूप दमनकारी नियंत्रण के उपाय कई गुना बढ़ जाते हैं, और इससे पार्टी में यह भावना व्यक्त होती है कि इसके परिणाम अनिश्चित हो सकते हैं। इससे पार्टी के चिंतन और उनकी तैयारियों के संबंध में दुर्लभ व विशिष्ट अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। वहीं दूसरी ओर एक पत्र में स्वीकार किया गया है कि संभवतः "विरोधी पश्चिमी ताकतों से 'तिब्बती मुद्दे' के बारे में और अधिक शोर उत्पन्न होगा और दलाई युग के बीतने के बाद तिब्बत मुद्दे का अंतरराष्ट्रीय भार कम होने की संभावना नहीं है।"[9]

पहले पत्र[10] में यह भी उल्लेख है कि दलाई लामा के निधन के पश्चात चीन को "तिब्बत पर संवाद करने में अपनी निष्क्रिय स्थिति से बचने" का अवसर प्राप्त होगा और वर्ष 2017[11] के पत्र के बाद इस बात का उल्लेख है कि पुनर्जन्म का विषय "अपरिहार्य होगा लेकिन इसे एक अवसर के रूप में भी देखा जाना चाहिए।"[12] दोनों पत्रों में चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा विलुप्त मूर्ति (गेधुन चुईकी नीमा, जिन्हें दलाई लामा द्वारा 11वें पेंचन लामा के रूप में चुना था और वर्ष 1995 में इस मूर्ति को विलुप्त कर दिया गया था) देखें- खंड छहः, 'द पेंचन लामा पूर्वोद्धारण' को प्रतिस्थापित करने के लिए चीन पेंचन लामा को प्रशिक्षित करने और तिब्बत पर नियंत्रण के लिए एक 'नए युग' की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शुरुआत करने की जनसम्पर्क रणनीति पर जोर दिए जाने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

दलाई लामा के निधन के पश्चात तिब्बत में हिंसा की गतिविधियों संभावना भी व्यक्त की जाती है; हालाँकि, यह विश्लेषण इस वास्तविकता को नजरअंदाज करता है कि हिंसा होने से संभवतः कारण तिब्बत में चीन के हस्तक्षेप और बौद्ध धर्म के विरूद्ध दमनकारी उपायों का परिणाम होगा। वहीं दूसरी ओर तिब्बती लोगों का अटूट विश्वास है कि अपने श्रद्धेय आध्यात्मिक गुरू दलाई लामा के अहिंसा नीति पर है चाहे उन्होंने कितने भी दशकों का राजनैतिक दमन देखा हो।

वर्ष 2008 का अत्यधिक शांतिपूर्ण विरोध, जिसमें युवाओं की प्रबल भागीदारी विशेष थी, जिनमें से बहुत से लोगों ने अपने हाथों में दलाई लामा की तस्वीर लेकर उनसे तिब्बत लौटने का आह्वान किया। यह चीनी नेताओं के लिए एक बड़ा क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला घटनाक्रम था। क्योंकि यहीं से यह स्पष्ट हो गया कि वे 14वें दलाई लामा के प्रभाव को कमजोर करने में और तिब्बतियों को बहुसंख्यक हान संस्कृति में आत्मसात कराने में भी विफल रहे हैं।

तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों को 'पुनः शिक्षित' करने संबंधी बीजिंग द्वारा दशकों के रणनीतिक प्रयास के बावजूद, एक पत्र[13] में बौद्ध मठों में जारी न्यास (विश्वास) की कमी को रेखांकित करता है, जिसमें उल्लेख किया गया है कि केवल 'वरिष्ठ स्तरीय

तुल्कुस' (जो कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा अनुमोदित हैं) को ही "बौद्ध धर्म के विचारों का उपदेश देने की अनुमति" होनी चाहिए साथ ही साधारण लामाओं और तुल्कुओं को "धार्मिक स्वतंत्रता पर चर्चा करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए" क्योंकि उनका मानना है कि यह "उनका विषेशाधिकार नहीं है और यह उनके कार्यों में शामिल नहीं है।"

आगे उल्लेखनीय है कि अगर केंद्र सरकार को 15वें दलाई लामा के लिए अपने खुद के उम्मीदवार को अध्यारोपित करना है, तो "15वें पुनर्जन्म की छवि को यथाशीघ्र एजेंडे पर रखा जाना चाहिए।" सत्ता से ऐसा ज्ञात होता है कि यह प्रक्रिया जारी है। तिब्बत के एक स्रोत के अनुसार, ल्हासा में एक 25-व्यक्तियों से मिलकर बने 'प्रीपेरेटरी स्मॉल ग्रुप' (तैयारी करने वाले प्रारंभिक लघु समूह) की स्थापना की गई है जो 15वें दलाई लामा के चयन की प्रबंध व्यवस्था की निगरानी करेगा।[14]

14वें दलाई लामा की स्थिति

लगातार दलाई लामाओं ने धार्मिक और राजनीतिक प्राधिकार को संयुक्त रूप से संयोजित तिब्बती नीति में मुख्य भूमिका निभाई है। शासन व्यवस्था की यह पूरक प्रणाली जिसे "चोइसी सुंगडेल" कहा जाता है, गाडेन फोडांग[15] सरकार के लिए एक ऐतिहासिक घटना बन गई, जिसके तहत दलाई लामाओं ने तिब्बत पर शासन किया। निर्वासित होने पर, गैडेन फोडरंग ट्रस्ट जिसकी स्थापना प्राथमिक निकाय[16] के रूप की गई थी उसे दलाई लामा और उत्तराधिकार की प्रक्रिया से संबंधित मामलों के प्रबंधन का कार्य सौंपा गया।

14 मार्च 2011 को, दलाई लामा ने लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित नेतृत्व को अपना राजनीतिक अधिकार सौंपने के लिए निर्वासित संसद को एक ऐतिहासिक पत्र जारी किया। दलाई लामा ने कहा कि "लोकतांत्रिक व्यवस्था का सार, संक्षेप में, सार्वजनिक हित के लिए निर्वाचित नेताओं द्वारा राजनीतिक उत्तरदायित्व ग्रहण करना है," और यह कि "अब समय आ गया है कि मैं अपना औपचारिक अधिकार सौंप दूं।" उस समय से ही सिक्योंग (तिब्बती राष्ट्रपति) जिनका निर्वाचन पूरे तिब्बती प्रवासियों द्वारा किया गया था उन्होंने निर्वासित प्रशासन की सभी राजनीतिक जिम्मेदारियों को अधिग्रहण किया है।

अपने "नव परिवर्तन और दलाई युग के बाद के काल में तिब्बत की विखंडनकारी गतिविधियों के विरूद्ध निवारक उपाय" शीर्षक से प्रकाशित पत्र में वांग यानमिन के कहने का अभिप्राय यह है कि निर्वासन में लोकतंत्र को राजनीतिक शक्ति दिये जाने को चीन दलाई लामा के शक्ति संवर्धन के रूप में मानता है।

सितंबर 2011 में, 14वें दलाई लामा ने अपने उत्तराधिकार से संबंधित एक औपचारिक लिखित घोषणा की थी, जिसमें उत्तराधिकार की प्रक्रिया पर अपने अधिकार के संबंध में उन्होंने एक निश्चियात्मक वक्तव्य दिया और इस प्रकार पूरी उत्तराधिकार प्रक्रिया में चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी की वैधता को नकार दिया गया।[17]

इस तरह के वक्तव्य देने के कारणों का उल्लेख करते हुए, दलाई लामा ने कहाः "चीन जनवादी गणराज्य के सत्तावादी शासकगण जो कम्यूनिस्ट होने के नाते धर्म को अस्वीकृत करते हैं किन्तु बावजूद इसके स्वयं को धार्मिक गतिविधियों में संलग्न करते हैं, उन्होंने तथाकथित पुनर्जन्म के नियंत्रण और मान्यता से संबंधित 'पुनः शिक्षा अभियान' चलाया है। यह अपमानजनक और घृणित व उपेक्षापूर्ण है। हमारी विशिष्ट तिब्बती सांस्कृतिक परंपराओं को मिटाने के लिए, चीन द्वारा विभिन्न अनुचित विधियों का प्रयोग किया जा रहा है यह वह नुकसान जिसकी भरपाई करना मुश्किल होगा।"

उन्होंने अपने वक्तव्य में आगे कहाः "इसके अलावा, उनका कहना हैं कि वे मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वे अपनी पसंद के 15वें दलाई लामा का चयन करेंगे। उनके हाल के नियमावली और विनियमों और परवर्ती घोषणाओं से यह स्पष्ट है कि उनके पास तिब्बतियों, और तिब्बती बौद्ध परंपरा के अनुयायियों और विश्व समुदाय को धोखा देने की व्यापक रणनीति है।"

"हमारी विशिष्ट तिब्बती सांस्कृतिक परंपराओं को मिटाने के लिए पुनर्जन्म को मान्यता देने संबंधी विभिन्न अनुपयुक्त तरीकों का प्रवर्तन से जो नुकसान हो रहा है उसे ठीक करना एक दुष्कर और जटिल कार्य होगा।"

"इसलिए, जब मैं शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हूं, मेरे लिए यह महत्वपूर्ण लगता है कि हम अगले दलाई लामा को मान्यता देने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश तैयार कर लें, ताकि संदेह या धोखे की कोई गुंजाइस नहीं रहे।"

14वें दलाई लामा ने इस बात को अक्सर दोहराया है कि पुनर्जन्म का प्रयोजन "पूर्ववर्ती (अवतार), के जीवन के कार्य को पूरा करना है" और यह कि उनका जीवन तिब्बत से बाहर है और "इसलिए मेरा पुनर्जन्म तार्किक रूप से बाहर के क्षेत्र में होगा (पी. आर.सी. के बाहर)।"[18]

उन्होंने यह भी कहा है कि अगले दलाई लामा संभवतः कोई महिला हो सकती है, इस कथन के क्रम में उन्होंने टिप्पणी करते हुए कहा, "यदि कोई महिला स्वयं को अधिक उपयोगी रूप में प्रकट करने में सक्षम पाई जाती है तो वह महिला के रूप में लामा का पुनर्जन्म हो सकता है" और उन्होंने आगे बताया कि उनके 90 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर[19] वे वरिष्ठ तिब्बती धार्मिक गुरुओं, तिब्बती वासियों और तिब्बती बौद्ध परंपरा के अनुयायी अन्य संबंधित व्यक्तियों के साथ गहन परामर्श के बाद इस मामले में निर्णय करेंगे।

वर्ष 2018 में, दलाई लामा ने फिर से इस बात का संकेत दिया कि दलाई लामा के बाल पुनर्जन्म को ढूंढने की परंपरागत प्रथा सर्वथा निश्चित प्रायः नहीं है। साथ ही उन्होंने कहा कि उनका उत्तराधिकारी कोई 'प्रबुद्ध लामा या महान विद्वान," हो सकता है या "लगभग 20 वर्ष" का कोई व्यक्ति हो सकता है।"[20]

वर्ष 2011 के दस्तावेज के उपसंहार में, दलाई लामा ने कहा हैं – "इस बात का स्मरण रखें कि, केवल उचित व विधिक पद्धतियों के माध्यम से पुनः अवतार का निर्धारण होगा इसके अलावा, चीन जनवादी गणराज्य में रहने वाले व्यक्तियों सहित किसी भी व्यक्ति द्वारा राजनीतिक उद्देश्यों के लिए चयनित उम्मीदवार को किसी प्रकार मान्यता या स्वीकृति नहीं दी जानी चाहिए।"

उत्तराधिकार के लिए धर्मशाला की रूपरेखा

वर्ष 2019 में 14वें तिब्बती धार्मिक सम्मेलन में, यह घोषणा की गई थी कि "दलाई लामाओं और तिब्बती लोगों के बीच कर्म बंधन अविभाज्य रहा है" और यह कि "सभी तिब्बतियों की वास्तविक इच्छा है कि भविष्य में दलाई लामा की संस्था और पुनर्जन्म की परंपरा का निरंतर चलने की कामना करते हैं।"

दलाई लामा के प्रति तिब्बती लोगों की आस्था और निष्ठा गहरी है और इसका साक्ष्य उनकी वापसी के साथ-साथ निर्वासित दलाई लामा के वक्तव्यों की प्रतिक्रियाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, भारी संख्या में तिब्बती लोगों द्वारा आत्म दाह कर विरोध जतानेवालों[21] ने दलाई लामा की तिब्बत में वापसी की मांग की है, और दलाई लामा द्वारा जारी एक वक्तव्य जिसमें विलुप्त प्रायः पशुओं की खाल का उपयोग बंद करने का आह्वान किया गया था। उसके बाद पूरे तिब्बत में हजारों तिब्बतियों ने अपनी मूल्यवान जानवरों की खालों (Pelts)[22] का दहन किया।

यह जुड़ाव न केवल दलाई लामा की संस्था के सहयोग पर आधारित और 400 वर्ष से अधिक समय से तिब्बती लोगों तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह आध्यात्मिक मत और प्रथा के दायरे में भी विस्तृत रूप से फैला हुआ है। तिब्बतियों के विचार में 15वें दलाई लामा के चयन में चीन का हस्तक्षेप उन्हें बिल्कुल अस्वीकार्य है।

इसके फलस्वरूप, बहुत सी बैठकों में निर्वासित तिब्बतियों के बीच तिब्बती संघर्ष के भविष्य को लेकर परामर्श किए जाने का पूर्वोदाहरण प्रस्तुत किया गया और दलाई लामा की संस्था की बैठक हुई हैं।

इस तरह की पहली बैठक वर्ष 2008 में हुई थी और बाह्य जगत के साथ संचार के खतरों के बावजूद, तिब्बत के भीतर से कुछ तिब्बतियों ने शिखर सम्मेलन में संदेश प्रेषित किये थे। एक बेनामी लेखक ने कहा – "जब तक दलाई लामा हमारे साथ हैं, हमारे पास संकल्प और प्रज्ञा है। अनिवार्यतः दलाई लामा को स्वयं पुनर्जन्म की प्रक्रिया की पुष्टि करनी चाहिए। यह केवल 14वें दलाई लामा के साथ हुआ है कि इसमें कोई विशेषाधिकार और औचित्य होगा, जिसके फलस्वरूप पुनर्जन्म और बाहरी शक्तियों की भागीदारी में एक निर्वात की अवधि (exile period) उत्पन्न ही होगी।"

"यदि मैं एक शरणार्थी के रूप में देह त्याग कर देता हूँ और तिब्बत की स्थिति जस की तस बनी रहती है, तो तार्किक रूप से मेरा पुनर्जन्म एक स्वतंत्र देश में होगा।"

इसके बाद अक्तूबर, 2019[23] को हुई बैठक में निर्वासित प्रशासन के प्रतिनिधि गण और पूरे प्रवासी तिब्बतियों के साथ एक साथ लाया गया। इस सम्मेलन में "महामहिम गुरु दलाई लामाओं और तिब्बती लोगों की वंशावली के मध्य संबंध" पर बल दिया गया और दलाई लामा के किसी भावी अवतार के संबंध में चीन द्वारा किये जाने वाले किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को अस्वीकृति किया गया।[24]

नवंबर 2019 में, महत्वपूर्ण तिब्बती बौद्ध धर्मावलम्बियों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए धर्मशाला में 14वां तिब्बती धार्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस बैठक के फलस्वरूप तिब्बतियों से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने के लिए मुख्य प्रवक्ताओं को एक अवसर मिल गया जिसमें दलाई लामा के पुनर्जन्म का अन्वेषण करने और उसे मान्यता प्रदान करने की बात कही गई। इसमें शामिल होने वाले व्यक्तियों में प्रमुख तिब्बती सम्प्रदाय, तिब्बती मठों संस्थानों के प्रधान और सदस्य गण, तिब्बती भिक्षु विहारों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ हिमालयी क्षेत्र के शिष्टमंडल शामिल थे।

इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से 'धर्मशाला घोषणा' पारित की गई, जिसमें अन्य महत्वपूर्ण बातों के साथ-साथ यह संकल्प लिया गया कि "14वें दलाई लामा के अगले पुनर्जन्म के प्रकटीकरण की विधि और तरीके के संबंध में निर्णय लेने का अधिकार पूर्णतः महामहिम 14वें दलाई लामा द्वारा ही लिया जाएगा। कोई भी सरकार या अन्यथा किसी व्यक्ति के पास ऐसा अधिकार नहीं होगा। यदि चीन जनवादी गणराज्य की सरकार राजनीतिक उद्देश्यों से किसी को दलाई लामा के पद के लिए उम्मीदवार चयन करता है, तो तिब्बती लोग उस उम्मीदवार को मान्यता नहीं देंगे और उसका सम्मान नहीं करेंगे।"

जनवरी 2021 में, कोलंबो, श्रीलंका में शांति के लिए एशियाई बौद्ध सम्मेलन का 13वां सम्मेलन आयोजित किया गया और इस सम्मेलन में सामूहिक रूप से कोलंबो संकल्प-2021 को अपनाया गया।

(अ) दलाई लामा की संस्था को जारी रखना और भविष्य में दलाई लामा के पुनर्जन्म को सतत जारी रखना;
(ब) विद्यमान पदधारी 14वें दलाई लामा को इस संबंध में पूर्ण अधिकार होगा कि दलाई लामा के अगले पुनर्जन्म की वापसी कैसे होनी चाहिए, और तिब्बती लोग कभी भी चीनी सरकार द्वारा चयनित और स्थापित किसी भी दलाई लामा के पुनर्जन्म को कभी भी मान्यता नहीं देंगे; और
(स) आठ सदियों पुरानी विशिष्ट तिब्बती परंपरागत पद्धति जो अगले दलाई लामा को खोजने और मान्यता देने में अपनाये जाने के निमित्त है। उन्हें प्रयुक्त करना।

कहाँ और क्यों?

वर्तमान तिब्बत के बाहर दो दलाई लामाओं का जन्म हुआ है। चौथे लाई लामा यूंटेन ग्यात्सो, मंगोलिया में गेंजिस खान के वंशज में पैदा हुए थे और छठे दलाई लामा त्सेयियांग ग्यात्सो, तवांग में पैदा हुए थे, जो वर्तमान समय में भारत के अरुणाचल प्रदेश में स्थित है। तवांग इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि परम पावन 14वें दलाई लामा ने मार्च 1959 में तिब्बत से नाटकीय ढंग से पलायन के बाद शुरू में चुँगथांग्मो में प्रारंभिक शरण ली थी।

इन प्रबल ऐतिहासिक संबंधों और दलाई लामा के इस वक्तव्य को देखते हुए कि "यदि मैं एक शरणार्थी के रूप में देह त्याग देता हूं और तिब्बत की स्थिति जस की तस बनी रहती है, तो तार्किक रूप से, मेरा पुनर्जन्म किस स्वतंत्र देश में होगा," ऐसी अटकलें हैं कि 15वें दलाई लामा का जन्म किसी हिमालयी क्षेत्रों में हो सकता है जहां 14वें दलाई लामा ने यात्रा की थी और उपदेश देने में अपना समय व्यतीत किया था।

इसकी ऐतिहासिक पूर्वोदाहरण है।

14वें दलाई लामा द्वारा मंगोलिया और अरुणाचल प्रदेश की यात्राओं के फलस्वरूप पी.आर.सी. को एक अनुस्मारक मिला है कि इस संस्था का भावी नियंत्रण और परिणामों पर किसी भी तरह से निरपेक्ष नहीं है। कुछ बौद्ध धर्मावलंबियों ने दलाई लामा द्वारा उनकी यात्राओं को पूर्ववर्ती दलाई लामाओं द्वारा उनकी यात्राओं वाले स्थानों में पुनर्जन्म लेने की प्रथा के अनुरूप दलाई लामा के इच्छा के संकेतक के रूप में भी माना है।

भारत और नेपाल के हिमालयी क्षेत्रों के लोग बड़े पैमाने पर तिब्बती बौद्ध धर्म का अनुसरण करते हैं और अपने धार्मिक गुरू के रूप में दलाई लामा के प्रति गहरा सम्मान और आस्था रखते हैं। सैकड़ों पुनर्जन्म लामा न केवल तिब्बत में रहते हैं बल्कि नेपाल और भारत में सिक्किम, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश में रहते हैं, और कुछ बौद्ध धर्मावलंबी पश्चिमी देशों में रहते हैं। इसके अलावा, पूरे भारतवर्ष में तिब्बती बौद्ध मठों में भारी संख्या में बौद्ध भिक्षु ज्यादातर हिमालयी क्षेत्रों रहते हैं।

वर्ष 2020 में, दलाई लामा ने बी.बी.सी के एक साक्षात्कार में कहा कि उनके पुनर्जन्म का विषय "तिब्बत और मंगोलिया के हिमालयी बौद्धों" पर निर्भर करेगा।[25]

पेंचन लामा का उद्धरण

ऐतिहासिक रूप से, पेंचन लामा तिब्बत के सर्वाधिक सम्मानित धार्मिक गुरुओं में से एक रहे हैं जिनका दलाई लामा के साथ विशिष्ट संबंध है। इससे पूर्व पेंचन लामाओं ने दलाई लामाओं को मान्यता देने और तत्पश्चात उन्हें शिक्षा देने की भूमिका का निर्वाह किया था। पांचवें दलाई लामा जिन्होंने अपने गुरु (उपदेशक), लोबसांग चुईकी गेनत्से को चौथे पेंचन लामा के रूप में मान्यता दी थी। वहीं, सातवें दलाई लामा ने छठे पेंचन लामा को मान्यता दी जिन्होंने इसके प्रत्युत्तर में आठवें दलाई लामा को मान्यता दी।

ऐसे कई ऐतिहासिक मिसालों को जानने के पश्चात, वर्ष 1995 में छह वर्षीय गेधुन चुईकी नीमा, के अपहरण होने से पुनर्जन्म को नियंत्रित करने संबंधी चीन के प्रयासों में तेजी आई। 11वें पेंचन लामा, जिसे वर्तमान दलाई लामा ने मान्यता दी थी, उनके स्थान पर चीन ने अपने उम्मीदवार ग्यालत्सेन नोर्बू को खड़ा कर दिया।[26]

14 मई 1995 को गेधुन चुईकी नीमा को महामहिम दलाई लामा ने पेंचन लामा के 11वें पुनः अवतार के रूप में मान्यता दी थी। 17 मई को गेधुन चुईकी नीमा और उनका परिवार गायब हो गया। बहुत से तिब्बती जो 11वें पेंचन लामा की तलाश से जुड़े थे उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें सजा सुनाई गई। उन पर आरोप लगाया गया कि वे दलाई लामा को गोपनीय जानकारी दे रहे थे। उस समय से ही गेधुन चुईकी नीमा या उनके परिवार के कुशल क्षेम या ठिकाने के बारे में 20 से अधिक वर्षों से कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई है।

यकीनन यह पुनर्जन्म की प्रथा पर, विशेष रूप से पेंचन लामा के पुनः अवतार का विनियोग कर तिब्बती बौद्ध मत के मूल में प्रहार करने के चीन के इरादे का पहला संकेत माना जाता है।

गेधुन चुईकी नीमा ग्यालत्सेन नोर्बू.

चीन की जनसंपर्क योजना अपने स्वयं का दलाई लामा उम्मीदवार ग्यालत्सेन नोर्बू को खोजने और संस्थापित करने की प्रक्रिया का अंश माना जाता है। हालाँकि, लगभग तीन दशकों के बाद भी ग्यालत्सेन नोर्बू की न तो विधिक मान्यता है और न ही अधिकांश तिब्बतियों से मान्यता मिली है।

ग्यालत्सेन नोर्बू को पेंचन लामा के रूप में थोपने संबंधी योजना चीन की पूर्व लचीली योजना (Soft Policy) से स्पष्टतः अलग थी। उदाहरण के लिए, चीन ने निर्वासित लामाओं द्वारा चयनित 17वें कर्मापा की तलाश और उन्हें मान्यता देने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने का कोई प्रयास नहीं किया। बीजिंग ने भी उन्हें आधिकारिक तौर पर 'मान्यता' दी और सूर्फू में उन्हें गद्दी पर आसीन होने की अनुमति दी।

आरंभ में, 11वें पेंचन लामा की तलाश भी कुछ इसी तरह से आरंभ हुई थी। ताशिलुनपो में पेंचन लामा की पारंपरिक सीट के पूर्व मठाधीश छादेल रिनपोचे को खोज दल का नेतृत्व करने की अनुमति दी गई थी। जब पारंपरिक तरीके से एक बालक की पहचान की गई, तो चीनी अधिकारियों ने जुलाई 1993 में बीजिंग में चादेल रिनपोचे को दलाई लामा के भाई अर्थात् ग्यालो थोंडुप से मिलने के लिए अनुमति दी थी। इस बैठक में यूनाईटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट (संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग) का एक अधिकारी भी सम्मिलित था।

हालांकि, मई 1995 में, जब 11वें पेंचन लामा को दलाई लामा द्वारा मान्यता दी गई थी, तो छादेल रिनपोचे को गिरफ्तार कर लिया गया था और अप्रैल 1997 में उन्हें 'अलगाववाद' और 'देश की गोपनीय सूचना लीक करने' के आरोप में छह वर्ष की कारावास की सजा सुनाई गई थी। उनकी गिरफ्तारी होने के बाद से ही उनकी स्थिति के बारे में किसी प्रकार की कोई सूचना उजागर नहीं हुई है।[27] उनकी सहायिका, जम्पा छुंगला को वर्ष 1996 में पांच वर्ष की सजा दी गई थी और नवंबर 2010[28] में उनकी जेल में मृत्यु हो गई थी।

सन् 1995 में पेंचन लामा के जबरन गुमशुद्गी के बाद से, चीनी सरकार ने उनका स्वास्थ्य, कुशलता और ठिकाने के बारे में स्वतंत्र अभिगम संबंधी बार-बार किए गए अनुरोध को यह दावा करते हुए अस्वीकार कर दिया, कि वे एक सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं और उनकी इच्छा है कि उन्हें किसी प्रकार परेशान नहीं किया जाए। चीन ने इस आधार पर उनकी गुमशदगी हो न्यायोचित ठहरा दिया कि यह उसकी स्वयं की सुरक्षा के लिए किया गया है।

चीनी प्रचार-प्रसार (Media) का आशय ग्याल्तसेन नोर्बू को तिब्बती बौद्ध पदानुक्रम में दलाई लामा से अधिक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करना है। उदाहरणार्थ, वर्ष 2005 में चिन्हुआ की एक रिपोर्ट ने उन्हें "तिब्बती बौद्ध धर्म में सर्वोच्च रैंकिंग वाले व्यक्ति" और "तिब्बती बौद्ध धर्म के नेता" के रूप में वर्णित किया।[29]

चीन के एक विद्वत शोध पत्र में ग्याल्तसेन नोर्बू के लिए ''छवि निर्माण'' योजना पर प्रकाश डालते हुए चीन की कार्यनीतिक आवश्यकता पर बल दिया गया है और इस संबंध में चिंता व्यक्त की गई है कि चीन के पास ऐसी छवि वाले तिब्बती प्रवक्ता का अभाव था जो ''दलाई लामा,'' के साथ प्रतिस्पर्धा कर सके। यही ''दलाई युग के बाद के काल में'' इसे जारी रखने का 'हमारा अवसर' (चीन का) है। इसके साथ ही इसमें इस बात को भी स्वीकार किया गया है कि अन्तर्निहित कठिनाइयों के चलते ''दलाई द्वारा 11वें पेंचन लामा के लिए पेंचन छवि निर्माण की निजी मान्यता एक सरल प्रक्रिया नहीं होगी।''

चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी (सी.सी.पी.) में निम्नांकित रणनीतियां शामिल हैंः

- ग्यालत्सेन नोर्बू को चीनी सरकार के 'राजनीतिक उपकरण' के रूप में पश्चिमी देशों की सरकारों की धारणाओं को चुनौती देने का प्रयास;
- ग्यालत्सेन नोर्बू को तिब्बतियों के हितों की रक्षा के लिए प्रवक्ता के रूप में परिणत करना और एक वरिष्ठ लामा जो बौद्ध धर्म को बढ़ावा दे, वह केवल "देश के लिए सिर्फ एक 'मुखौटा' मात्र नहीं हो, बल्कि धर्म से प्रेम भी करें"[30]
- ग्यालत्सेन नोर्बू की स्थिति को मजबूत करना ताकि वह दलाई के निधन के बाद पश्चिम देशों द्वारा सृजित 'विलुप्त मूर्ति' की भूमिका को पूरा कर सके। इस लक्ष्य कर प्राप्ति करने में बड़ी कठिनाई आएगी […]।"

इस योजना को आगे बढ़ाते हुए, चीनी प्राधिकारियों ने उत्तरोत्तर ग्यालत्सेन नोर्बू के प्रोफाइल को धर्मनिरपेक्षता के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र में भी ऊपर उठाया है। उन्हें बहुत से राजनीतिक अधिकार दिए गए हैं जिनमें निम्नांकित शामिल हैं:

- सन् 2010 में ग्यालत्सेन नोर्बू को चीनी बौद्ध संघ के उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया।
- सन् 2010 में, उसे चीनी लोगों की परामर्शदात्री सम्मेलन के लिए नियुक्त किया गया। यह सम्मेलन एक रबर स्टाम्प जैसी निकाय है जो पार्टी के वरिष्ठ सदस्यों के निर्णयों को स्वीकृति प्रदान करता है।[31]
- सन् 2019 में, ग्यालत्सेन नोर्बू को टी.ए.आर. में चीन शाखा के स्थानीय बौद्ध संघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। यह संघ का एक महत्वपूर्ण उप-विभाग है, जो पूर्णतः तिब्बती बौद्ध धर्म के नियंत्रण के प्रति समर्पित है और चीनी बौद्ध संघ के तिब्बती बौद्ध पर कार्य आयोग के रूप में जाना जाता है।[32]

सामान्य बौद्ध मठों के कर्तव्यों को आगे बढ़ाते हुए, जैसा कि इस तरह के व्यक्तित्व से अपेक्षा की जाएगी, ग्यालत्सेन नोर्बू की भूमिका का रणनीतिक और राजनीतिक महत्व भी देखा जा सकता है:

- ग्यालत्सेन नोर्बू ने वर्ष 2019 और जुलाई 2022 में भारतीय सीमा के सटे हुए संवेदनशील क्षेत्रों में टी.ए.आर. में बौद्ध मठों और गांवों का 'निरीक्षण दौरा' किया।[33] तत्कालीन टी.ए.आर. पार्टी के मुखिया वू यिंग्जी की यात्रा से पूर्व उन्होंने जानकारी दी और राजकीय प्रेस में प्रकाशित एक रिपोर्ट में भी संकेत दिया कि ग्यालत्सेन नोर्बू की भूमिका केवल धार्मिक गतिविधियों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे आगे बढ़कर इसमें 'शोध' भी शामिल है।[34]
- ग्यालत्सेन नोर्बू की फ्लोका सिटी स्थित विवादास्पद जैम जल विद्युत केन्द्र (हाइड्रो पावर स्टेशन) में उनकी उपस्थिति फोटोग्राफ से हुई है।[35] यह किसी भी धार्मिक व्यक्तित्व के लिए संकेत देने का एक अद्भुत अवसर था कि वह अन्य भूमिकाओं का भी निर्वाह कर सकता है जैसे कि इस बात को उजागर करना के विश्व के सबसे ऊंचे पठार पर स्थित तिब्बत के जल को कैसे पी.आर.सी. एक रणनीतिक परिसंपत्ति मानता है।[36]
- वर्ष 2018 में ग्यालत्सेन नोर्बू ने लामो लात्सो के तीर्थ स्थलीय झील का दौरा किया[37], इस झील को 'ओरेकल लेक' कहा जाता है। यह पवित्र स्थल दलाई लामा के पुनर्जन्म और उनके द्वारा चयनित पेंचन लामा, गेधुन चुईकी नीमा की मान्यता दोनों से जुड़ा है।[38]
- अप्रैल 2012 में, ग्यालत्सेन नोर्बू ने हांगकांग में मुख्य भूमि के बाहर विश्व बौद्ध मंच में अपनी पहली उपस्थिति दर्ज की। हांगकांग में अपने प्रवास के दौरान चीनी पेंचन लामा ने बुद्ध की कपाल अस्थि अवशेष स्थल का दौरा किया, जिसे चीनी पुरातत्वविदों ने जियांग्सू प्रांत में पाया था, और यह बौद्ध की विरासत संबंधी दावे को पुख्ता करने के लिए बीजिंग द्वारा किए गए प्रयासों का हिस्सा था।[39]

ग्यालत्सेन नोर्बू के लिए सर्वोच्च स्तर पर कम्यूनिस्ट पार्टी का समर्थन और चीन की भावी योजना में उनकी भूमिका को शीर्षस्थ चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी (सी.सी.पी.) के अधिकारियों के साथ उनकी बातचीत में देखी जा सकती है:

- 10 जून, 2015 को, ग्याल्तसेन नोर्बू का पार्टी के लिए खतरा संबंधी बीजिंग में यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट (संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग) की बैठक के तत्काल बाद, शि-जिनपिंग और पोलित ब्यूरो के तीन अन्य सदस्यों द्वारा झोंगनहाई में स्वागत किया गया।[40]
- जुलाई 2011 में, ग्यालत्सेन नोर्बू की मुलाकात चीनी नेता से तिब्बत में हुई, जब शी ने एक खटग की पेशकश कर तशिल्हुन पो मठ में 10वें पेंचन लामा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।
- सन् 2006 में, मैरून-रंग के परिधान धारण किए गए ग्यालत्सेन नोर्बू ने सूट पहने हुए लोगों और 27 देशों तथा क्षेत्रों से आये बौद्ध भिक्षुओं के रैंक में शामिल हुए। वे सभी हांगझोऊ, झेजियांग प्रांत के पूर्वी शहर में चीन की मेजबानी में 'विश्व बौद्ध मंच' में एकत्रित हुए थे। विश्व का सर्वाधिक प्रसिद्ध बौद्ध धर्मावलंबी, में दलाई लामा को आमंत्रित नहीं किया गया था क्योंकि चीनी अधिकारियों ने उन्हें एक खतरनाक 'अलगाववादी' तत्व के रूप में चित्रित किया था।[41]

यद्यपि, ग्यालत्सेन नोर्बू का धर्म निरपेक्षता के साथ ही धार्मिक क्षेत्र में वैश्विक प्रोफाइल को बढ़ाने के चीन के प्रयासों को मई 2022 में झटका लगा जब उन्हें नेपाल स्थित महात्मा बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी जाने की अनुमति नहीं दी गई। नेपाली सरकार ने कथित रूप से उन्हें काठमांडू स्थित अमेरिकी दूतावास और भारत सरकार दोनों के द्वारा भय अभिव्यक्त करने के बाद अनुमति वापस ले ली।[42] यह ग्यालत्सेन नोर्बू की चीन के बाहर दूसरी यात्रा रही होती।[43]

इसके बदले, 16 मई 2022 को, नरेंद्र मोदी ने महात्मा बुद्ध के जन्म समारोहोत्सव बुद्ध जयंती दिवस के मौके पर लुंबिनी की यात्रा की। श्री नरेन्द्र मोदी भारत की सीमा के समीपस्थ छोटे से तीर्थ शहर की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधान मंत्री बने, जो इस बात का सूचक है कि भारत उस क्षेत्र में अपना प्रभाव स्थापित करना चाहता है।

पुनर्जन्म के संबंध में चीन की नई रणनीतियाँ

चीन में बौद्ध धर्म का पराभव उसके तिब्बत पर आक्रमण से पहले का है। जब साम्यवादी सेना (रेड आर्मी) सन् 1935 में लंबे मार्च के दौरान पूर्वी तिब्बत से होकर गुजरा तो उन्होंने बहुत से बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया और अनाज को जब्त कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप वहाँ अकाल पड़ा। सन् 1959 के बाद, चीन ने एक के बाद एक मुहिम चलाई जिसमें तथाकथित 'लोकतांत्रिक सुधार' और सांस्कृतिक क्रांति भी हुई जिसके दौरान लगभग सभी मठों को नष्ट कर दिया गया था।

सन् 1994 के बाद से तिब्बत में धर्म पर चीन की कार्रवाई तब और अधिक क्रमबद्ध हो गई जब उसने बहुत से प्रतिबंधात्मक उपाय किए जिनमें बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों की संख्या को सीमित करना शामिल था; दलाई लामा की तस्वीरों पर प्रतिबंध लगाना और धार्मिक गुरुओं के विरूद्ध कटु अभियान शुरू कर दिया। हालाँकि, इन उपायों से तिब्बती भक्ति या उनकी धार्मिक अस्मिता की रक्षा और संरक्षण के दृढ़ संकल्प को मिटाने में पूरी तरह से सफल नहीं हुए हैं।

यद्यपि, दलाई लामा के पसंद पेंचन लामा के अपहरण से तिब्बती बौद्ध संस्कृति के निर्णयकर्ता के रूप में चीन की सरकार को सशक्त करने के साधन के रूप में लामाओं के पुनः अवतार के चयन, संस्थापना और शिक्षा को नियंत्रित करने की दिशा में और अधिक आक्रामक और निरंतर उपागम हमारे समक्ष उपस्थित हुआ है। उसके बाद के दशकों में, चीनी प्राधिकारियों ने तिब्बती पुनर्जन्म प्रणाली प्रथा पर बीजिंग के नियंत्रण को और सशक्त करने के लिए बहुत से कठोर उपाय किये, जिसमें आदेश संख्या 5 और आधिकारिक तौर पर पुनः अवतार वाले लामा का डेटाबेस बनाना शामिल है, किन्तु इसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्वीकृति और उनका अनुमोदन प्राप्त करना होगा।

आदेश संख्या 5, या "तिब्बती बौद्ध धर्म में जीवित बुद्धों के पुनर्जन्म के लिए प्रबंधन के उपाय", 1 सितंबर 2007 से कार्यान्वयन के लिए स्टेट ऐडमिनिस्ट्रेशन ऑफ रेलीजिस अफेयर (धार्मिक मामलों का राज्य प्रशासन) (SARA) द्वारा पारित किया गया था।[44] यह विधिक माध्यमों से पुनः अवतार के 'विनियमन' और पार्टी के 'प्रबंधन' का पहला चरण सिद्ध हुआ। इस कानून में 'अनधिकृत' समूहों और व्यक्तियों द्वारा 'तुल्कू' की तलाश करने और उसे मान्यता देने पर प्रतिबंध का उल्लेख किया गया है, साथ ही यह भी उल्लेख किया गया है कि "जीवित बुद्धों के पुनर्जन्म की प्रक्रिया में किस विदेशी संगठन या व्यक्ति विशेष का कोई प्रभुत्व अथवा कोई हस्तक्षेप नहीं होगा।" (अनुच्छेद दो); इसका तात्पर्य यह भी हुआ कि 'जीवित बुद्ध' को कानून के अनुसार अपना तुल्कू का दर्जा अवश्य परित्याग करना होगा यदि वे पी.आर.सी. छोड़ना चाहते हैं। इसके परिणामस्वरूप यदि बीजिंग ऐसा करने का प्रयास करेगा तो पी.आर.सी. की सीमाओं से बाहर बौद्ध धर्म के धर्मावलंबियों वंशावली की वैधता पर भी प्रश्न चिह्न लग सकता है।

आदेश संख्या 5 में फैसला सुनाया कि 'जीवित बुद्धों' के पुनर्जन्म जिसे सरकारी अनुमोदन नहीं प्राप्त हुआ है वे 'गैर कानूनी' या 'गैर विधिमान्य' हैं। जिसका आशय यह बताना है कि पुनर्जन्म लेने वाले लामाओं को मान्यता प्रदान करना या उन्हें शिक्षित करने की सार्थकता अब समाप्त हो गई है, क्योंकि इस संबंध में निर्णय केवल चीनी सरकार लेगी जहाँ यह निर्धारित किया जाएगा कि पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति एक वैध धार्मिक व्यक्तित्व है या नहीं। चीन ने यहाँ तक कि तुल्कुओं के मामले में अपनी कार्रवाई भूतलक्षी प्रभाव से की जिन्हें प्रामाणिक तिब्बती धार्मिक तरीकों से सन् 2007 से वर्षों पहले मान्यता दी गई थी।

आदेश संख्या 5 में विशिष्ट रूप से दलाई लामा को नामित नहीं किया गया था। लेकिन पुनर्जन्म संबंधी आधिकारिक भाषा दलाई लामा पर यह आरोप मढ़ने में और अधिक कटु और आक्रामक थी, जो उनके निरंतर प्रभाव और उन्हें दबाने के लिए एक राजनीतिक अनिवार्यता की तीव्र जागरूकता से उभर रही है, खासकर जब सन् 2009 के बाद से पूरे तिब्बत में आत्म दाह की लहर फैल गई थी।

उदाहरण के लिए, सन् 2019 में, बीजिंग समर्थक अखबार ग्लोबल टाइम्स में रिपोर्ट आई कि 'सरकारी विनियमों में लिखित और तिब्बती बौद्ध धर्म में सन्निहित (अंतःस्थापित) पुनर्जन्म को भलीभाँति कार्यान्वित किया जाएगा और यह किसी व्यक्ति विशेष अथवा 'दलाई लामा के अलगाववादी गुट' से निष्प्रभावित रहेगा।[45]

अपेक्षाकृत और अधिक व्यवस्थित व क्रमागत उपागम का आशय न केवल दलाई लामा के स्वयं के पुनर्जन्म को रोकना था अपितु उनके अपनी मातृभूमि में वापसी की किसी भी संभावना को भी पूर्णत समाप्त करना था। यह तिब्बत में तिब्बतियों के लिए पीड़ादायक

है; उन लोगों का व्यापक आह्वान जिन्होंने दलाई लामा की घर वापसी के लिए वर्ष 2008 में शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शनों में अपनी जान की बाजी लगा दी थी।

सन् 2016 में, चीनी प्राधिकारियों ने घोषणा की कि उन्होंने "देश में निवास करने वाले 1,300 से अधिक जीवित बौद्धों की जीवनी का जीवित बुद्ध डेटाबेस" पूरा कर लिया है। पार्टी के विचारक और दलाई लामा के दूतों के साथ संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग के भूतपूर्व वार्ताकार झू वेइकुन ने कहा कि इस डेटाबेस का आशय "दलाई लामा को बड़ा झटका देना था, क्योंकि वे अपनी इच्छा से जीवित बौद्ध के अनुसमर्थन के लिए अपनी धार्मिक स्थिति का उपयोग कर रहे हैं। जो धार्मिक परंपरा के विरूद्ध है यह तिब्बत स्थित बौद्ध मठों पर नियंत्रण करने और देश को विभाजित करने का एक प्रयास था।"[46]

चीनी राज्य की मीडिया ने कहा कि ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली में 1,311 व्यक्तियों के प्रोफाइल शामिल हैं जिसे सरकार ने "पुनर्जन्म लेने वाले बौद्ध" की मान्यता दी है।[47] परवर्ती धार्मिक डाटाबेस प्रांतीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किया गया है जिसमें टी.ए.आर. भी शामिल हैं।

मई 2022 में जारी नवीनतम चीनी सरकार के अद्यतन श्वेत पत्र में इस बात की पुष्टि की गई है कि टी.ए.आर. में, "92 पुनर्जन्म लेने वाले जीवित बौद्धों की पहचान की गई है और उन्हें पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठानों और ऐतिहासिक परंपराओं के माध्यम से इन्हें अनुमोदित किया गया है (अर्थात् इसका अभिप्राय यह है कि उनकी पहचान आधिकारिक तौर पर की गई थी, हालांकि पारंपरिक माध्यमों से उनकी पहचान नहीं की गई)।[48],[49]

पुनः अवतार लेने वाले लामाओं पर बल दिया जाना, हालिया वर्षों में तिब्बत में कुछ वरिष्ठ अवतार लामाओं की निष्ठा को प्राप्त करने में उनकी विफलता के पश्चात प्राधिकारियों के समक्ष आने वाली राजनीतिक कठिनाइयों का सूचक था।

17वें कर्मपा ओगिन चिले दोर्जे जिसे तिब्बती लामाओं द्वारा मान्यता दी गई थी और बीजिंग द्वारा अनुमोदित और दलाई लामा ने इसकी अभिपुष्टि की थी, उसे चीनी प्राधिकारियों द्वारा एक 'देशभक्त व्यक्तित्व' के रूप में तैयार किया जा रहा था। हालांकि, सन् 1999 में वह तिब्बत से पलायन कर गया और अब वह देश से बाहर रह रहे हैं। अर्जिया रिनपोचे, जो इस समय अम्दो में कुमबुम बौद्ध मठ के मठाधीश थे इसके अलावा उन्होंने कई आधिकारिक पदों को सुशोभित भी किया और चीन की पेंचन लामा का बीजिंग द्वारा समर्थन की मांग किए जाने के बाद सन् 1998 में अमेरिका का पक्ष त्याग दिया। उसके बाद दोनों ने तिब्बत में वास्तविक धार्मिक स्वतंत्रता की कमी के बारे में वक्तव्य दिए।[50]

दिसंबर 2016 में, केंद्रीय पार्टी समिति पूरे चीन में सभी उच्च-स्तरीय तिब्बती बौद्ध संस्थाओं के प्रबंधन पर कम्युनिस्ट पार्टी का नियंत्रण स्थापित करने पर सहमत हुई।[51] दो वर्ष बाद सन् 2018 में, यह घोषणा की गई कि 200 कम्युनिस्ट पार्टी के कैडर और अधिकारी/कर्मचारी गण सभी प्रबंधन, वित्त, सुरक्षा, प्रवेश (नामांकन) और यहाँ तक कि लारुंग गार के प्रमुख बौद्ध संस्थानों में पाठ्य पुस्तक के चयन के मामले में भी अपना प्राधिकार प्रदर्शन कर रहे थे। इसे पूर्व के वर्षों में हजारों भिक्षुओं और भिक्षुणियों को निष्कासित किया गया था।[52]

पारंपरिक रूप से, लामाओं, खेनपो, गेशे और अन्य वरिष्ठ धार्मिक नेताओं, जिन्होंने मठों, भिक्षुणी विहारों और अन्य बौद्ध शिक्षण केंद्रों के मामलों का प्रबंधन किया है। धार्मिक नेताओं ने बौद्ध भिक्षुओं के अध्ययन, प्रशिक्षण, ध्यान, एकांतवास और निश्चित तौर पर अपने क्षेत्र के भीतर पुनः अवतारों की तलाश और मान्यता आदि के संबंध में निर्णय लिया।

चीन सदियों पुरानी इस प्रथा को औंधे मुंह गिराने की सुनियोजित तरीके से योजनाएं बनाता है।

तिब्बती पुनर्जन्म प्रणाली को नियंत्रित करने की दिशा में सी.सी.पी. की कठोर रणनीति को टी.ए.आर. पार्टी के सचिव वांग जुन्झेंग के नए पदस्थापन से भी प्रमाणित किया जा सकता है। वांग, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, यूरोपीय संघ और कनाडा[53] द्वारा स्वीकृत मुट्ठी भर चीनी नेताओं में से एक हैं, वे इससे पूर्व शिंजियांग उइग्यूर स्वायत्त क्षेत्र (पूर्वी तुर्किस्तान) की सुरक्षा के प्रमुख थे, जहां उन्होंने सामूहिक गिरफ्तारियां, प्रताड़ना, उत्पीड़न और यौन हिंसा के विरूद्ध पूरे क्षेत्र में "पुनः शिक्षा" शिविर की अध्यक्षता की थी।[54]

सन् 2021 में उनकी पहली बैठकों में से एक वार्तालाप 'शासकीय' थी। बीजिंग ने ल्हासा में तुल्कुस को मान्यता दी जिसके क्रम में वांग ने पुनः अवतारों पर चीन के नियंत्रण पर बल दिया था।[55]

चीन द्वारा पुनः अवतार के लिए बनाई गई नई रणनीतियों में शामिल हैंः

- गहन राजनैतिक शिक्षा एवम् मतारोपण का प्रचार प्रसार न केवल तिब्बतीय क्षेत्रों में अपितु भारत की सीमा से सटे सामरिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में करना।
- पार्टी के प्रति वफादार वरिष्ठ धार्मिक और धर्म निरपेक्ष हस्तियों को तैयार करना। ये व्यक्ति चीन द्वारा स्वयं चयनित दलाई लामा के उम्मीदवार को प्रतिष्ठापित करने और इस पर सहमति व्यक्त करने के प्रयासों में मुख्य माना जाता है।
- सरकार द्वारा संचालित संस्थानों के नेटवर्क में शासकीय सी.सी.पी. डेटाबेस पर विस्तृत रूप से युवा लामाओं का जो पुनः अवतरित हैं, के प्रशिक्षण का विवरण दिया गया है।[56]
- माओत्से तुंग के जन्मस्थान या सैन्य ठिकानों जैसे 'लाल' स्थलों (Red Sites) की निगरानी के लिए धार्मिक तीर्थयात्राओं को प्रतिस्थापित करना।[57]
- 'चार मानक' के अभियान, जिसे वर्ष 2018 से बौद्ध मठों में पर थोपा गया है, इसमें धार्मिक अनुयायियों और धर्म प्रवर्तकों को कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति निष्ठा रखने की अपेक्षा की जाती है साथ ही "महत्वपूर्ण क्षणों में उन्हें भरोसेमंद" भी होना चाहिए। बौद्ध भिक्षुओं से अपेक्षा है कि वह पुनर्जन्म को मान्यता देने की सरकार द्वारा अनुमोदित विधियों का संवर्धन करें। इस अभियान में अगले दलाई लामा के संबंध में और किसी अन्य पुनः अवतार वाले लामा के बारे में व्यापक सहमति प्राप्त करने के सी.सी.पी. की विचारधारा और अर्ध-कानूनी प्रयास सन्निहित हैं।

इस छद्म कानूनी कार्रवाई से जैसे, आदेश संख्या 5 से कम्युनिस्ट पार्टी की योजना है कि पुनः अवतारों को मान्यता देने की तिब्बती बौद्ध धर्म की प्रथा को रद्द करने और गैर-विधिमान्य करार देने की योजनाएं हैं। यदि कोई धर्म प्रवर्तक इस त्वरित नियंत्रण के इन उपायों का विरोध करता है, तो उन्हें कारावास, यातना, और यहां तक कि मौत की सजा दी जायेगी। सन् 2020 में नागचू (Ch: Naqu) एक बौद्ध साधु को प्रताड़ित किया गया और बाद में उसकी मृत्यु हो गई, उनके फोन में उस युवा बालक की तस्वीर पाई गई जिसे भारत में 14वें दलाई लामा द्वारा पुनर्जन्म लामा के रूप में मान्यता दी गई थी।[58] दूसरा धार्मिक प्रवर्तक अपने अस्सी वर्ष के आयु में था, तुल्कू दावा को सात साल के कारावास की सजा दी गई थी और उस पर दलाई लामा के साथ अपने बौद्ध मठ में पुनर्जन्म के संबंध में संवाद करने का संदेह होने पर हुई उनकी मृत्यु की सजा दी गयी।[59]

प्रशिक्षण कार्यक्रम: पार्टी के हस्तक्षेप को उचित ठहराने का उपागम

तिब्बती पुनर्जन्म की प्रक्रिया पर चीन का नियंत्रण "मातृभूमि के पुनर्मिलन की रक्षा, और तिब्बती बौद्ध धर्म से समाजवाद की ओर अनुकूलन"[60] के साथ-साथ "पार्टी की विचारधारा और आधारिक समाज" का प्रचार-प्रसार" पर केंद्रित है।

चीन के तुल्कु प्रशिक्षण कार्यक्रमों के उदाहरणों में शामिल:

- मई 2020 में, 100 से अधिक 'जीवित बौद्ध' और उनके मठों में तैनात पार्टी कैडरों ने उन्हें धार्मिक नीति और "पुनर्जन्म प्रबंधन" पर नौ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किया गया। कुछ वर्ष पूर्व नवंबर 2016 में, केन्द्रीय समिति की के यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट और टी.ए.आर. पार्टी समिति द्वारा आयोजित "तिब्बत में नए पुनः अवतार वाले जीवित बौद्धों" के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के समापन समारोह में, झू वेइकुन[61] ने कहा, "जीवित बुद्धा प्रशिक्षण वर्ग की महत्ता को इतिहास के नजरिए से, तिब्बती बौद्ध धर्म के सरकारी प्रबंधन के परिप्रेक्ष्य से, मातृभूमि की एकता को बनाए रखने के नजरिए से और तिब्बती बौद्ध धर्म द्वारा समाजवाद के अनुकूल बनाने के नजरिए से समझे जाने की आवश्यकता है।"[62]
- सिचुआन में यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट ने सितंबर 2020 में 'जीवित बौद्धों' की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया था और ऐसी घोषणा की गई थी कि इसने प्रांत में पार्टी द्वारा अनुमोदित 439 से अधिक पुनर्जन्मों को प्रशिक्षित किया है।[63]
- कम्युनिस्ट पार्टी के पार्टी कार्यकर्ताओं को पुनर्जन्म के उपागम का भी प्रशिक्षण लेना होता है। यह फरवरी, 2021 में यह हुआ, जब कैडर के लोगों और कार्यकर्ताओं को बाध्य होकर ग्यालथंग, (जिसे प्राधिकारियों ने 'शंगरी ला सिटी के रूप में नई ब्रांडिंग की थी) डेकन, खाम (चीनीः डेकिंग, युन्नान प्रांत) में अध्ययन सत्र में भाग लेने के लिए बाध्य किया गया।[64]

वह अधिकारी गण जिन्होंने चीन जनवादी गणराज्य में 15वें दलाई लामा की पहचान की थी।

अपने आधिकारिक पुनर्जन्म के लामा डेटाबेस के मामले में, चीन 'साधारण' तुल्कुओं (जिन्हें प्रांतों और स्वायत्त क्षेत्रों के धार्मिक कार्य विभागों द्वारा अनुमोदित किया गया है) तथा वह जिनसे गुरुत्तर प्रभाव है जिन्हें धार्मिक मामलों में राज्य प्रशासन को रिपोर्ट देने की अपेक्षा की जाती है, दोनों में विभेद करता है। दूसरी श्रेणी 'विशेष रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव वाले जीवित बुद्ध' की है (जो परिभाषित नहीं है), उन्हें भी राज्य परिषद को रिपोर्ट करना होगा।[65]

मई 2021 में, चीनी श्वेत पत्र में उल्लेख किया गया कि "वर्तमान में 600 से अधिक धार्मिक प्रवर्तकों ने विभिन्न स्तरों पर जनसभाओं और राजनीतिक परामर्शदात्री सम्मेलनों के प्रतिनिधि या सदस्यों के रूप में कार्य करते रहे हैं।"[66] एक बड़ी संख्या में धर्मगुरूओं को शासकीय तौर पर 'जीवित बुद्ध' माने जाने की संभावना है।

वर्ष 2021 में किंघई में, किंघई चीनी जनवादी परामर्शदात्री समिति (सी.पी.पी.सी.सी.) के 35 सदस्य धार्मिक समुदाय से थे, जिनमें 10 'जीवित बुद्ध' भी शामिल थे।[67] सिचुआन में, सी.पी.पी.सी.सी. के सदस्यों में सात तुल्कुस और यार्चेन गार, जो खाम में एक धार्मिक संस्थान का एक मठाधीश को भी शामिल किया गया। जहां हजारों भिक्षुणियों और बौद्ध भिक्षुओं को निष्कासित कर उनके घरों को ध्वस्त किया गया।[68] वर्ष 2021 में कान्सु (Gansu) प्रांत से सी.पी.पी.सी.सी. सदस्यों में पांच 'जीवित बुद्ध' शामिल थे।[69]

राज्य द्वारा चयनित 'जीवित बौद्धों' को भी चीन अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति के रूप में प्रयोग करता है – उदाहरणार्थ शांषा तेनजिन चुईदक, तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र की पीपुल्स कांग्रेस और 'जीवित बौद्ध के पुनर्जन्म', की स्थायी समिति के उप निदेशक नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल, ने वर्ष 2015 में दलाई लामा पर बीजिंग के पक्ष में समर्थन और संदेश को आगे बढ़ाने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की।[70]

इनमें से कई व्यक्ति रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जैसे चामडो, खाम (चैप्टर काम्डो, टी.ए.आर.) में स्थित संस्थाओं या बौद्ध मठों से जुड़े हुए हैं। जब छम्दो – अक्तूबर 1950 में भारी प्रतिरोध के बाद पीपल्स लिबरेशन आर्मी पर हमला किया तो कम्युनिस्ट अधिकारियों ने मध्य तिब्बत पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। चाम्डो मार्च, 2008 में भारी विरोध प्रदर्शन के बाद क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था नाटकीय ढंग से कड़ी कर दी गई और आपातकालीन उपायों को लागू किया गया, जिसमें "मृत्यु से प्रतिरक्षा के लिए प्रमुख कार्यस्थल, महत्वपूर्ण लक्ष्य और संवेदनशील एवं अत्यधिक नाजुक समय में तत्परता दिखाना शामिल था"[71]

1 अक्टूबर 2019 को पार्टी के राष्ट्रीय दिवस की 70वीं वर्षगांठ के आयोजन के सिलसिले में, चीनी राज्य मीडिया ने छम्दो में छम्बा लिंग बौद्ध मठों में बौद्ध भिक्षुओं के शि-जिनपिंग और माओ जेदांग की विशालकाय प्रतिमाओं पर झूलते हुए खटग की फुटेज का प्रसारण किया था। ऐसी अटकलें लगाई जा रही हैं कि चीनी प्राधिकारीगण ऐसे बौद्ध मठों का चुनाव करें जो तिब्बतियों के बीच काफी प्रसिद्ध हो और जहां से भावी दलाई लामा के उम्मीदवार निकलें। देखें परिशिष्ट A) दलाई लामा के उत्तराधिकार में व्यक्तियों की भूमिका।

तिब्बती बौद्ध धर्म पर रणनीतिक नियंत्रण

दलाई लामा के प्रति निष्ठा को स्थानापन्न करते हुए पार्टी की नीति के प्रति निष्ठा के मामले में तिब्बत पर नियंत्रण कायम करने की चीन के व्यापक प्रयासों में धार्मिक क्षेत्र में बहुत सी विघ्नकारी गतिविधियों में देखी जा सकती है। बौद्ध मठ की शिक्षा को धर्मनिरपेक्ष स्कूली शिक्षा के साथ बदलने संबंधी अपने उद्देश्य का संकेत कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रचार-प्रसार हो रहा है इस प्रकार युवा पीढ़ी में 'लाल जीन्स' (Red Gene) को अधिरोपित किया जाए – नए बौद्ध भिक्षुओं को बौद्ध मठों में स्थित विद्यालयों को छोड़कर धर्मनिरपेक्ष शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाध्य किया जा रहा है।

परंपरागत रूप से तिब्बत में बौद्ध भिक्षु युवावस्था में बौद्ध मठों में जाते थे जो संस्कृति और शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी की कार्य दलों ने पहले युवा बौद्ध भिक्षुओं को वर्ष 1990 के दशक के मध्य में बौद्ध मठों में शामिल होने से रोकना शुरू किया, क्योंकि अलग-अलग बौद्ध मठों में प्रवर्तन का स्तर भिन्न था। आज तिब्बत में चिंघाई और सिचुआन सहित सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों में युवा बौद्ध भिक्षुओं को बलपूर्वक प्रवेश दिए जाने का प्रयास जोरों पर है।[72]

यह महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि तिब्बती बौद्ध मठों में युवावस्था से ही बौद्ध भिक्षुओं को अपनी संस्कृति के रक्षक के रूप में और बौद्ध धर्म मूल्यों को अपनाने की दिशा में अवगत किया जाता है। जब वे बड़े होते हैं तो वे स्वयं द्वारा अधिगमित शिक्षा को अन्य बौद्ध भिक्षुओं में अंतरित करते हैं। जब नवप्रविष्ट बौद्ध भिक्षुओं को बल पूर्वक बौद्ध मठों को छोड़ने के लिए बाध्य किया जाता है, ताकि कई पीढ़ियों के मध्य इस महत्वपूर्ण संबंध की कड़ी टूट जाए।

चीन ने तिब्बती धार्मिक पदानुक्रम (hierarchy) को कमजोर एवं अन्तःस्थापित करने और विधि सम्मत तिब्बती धार्मिक नेताओं (भले ही वे तिब्बत के अन्दर के हों या बाहर के), के प्राधिकार को दुर्बल करने की अपनी रणनीति के रूप में नए उपायों को भी अपनाया है।

पारंपरिक तिब्बती बौद्ध 'गेशे' डिग्री, जो कि बौद्ध धर्म की उच्चतम अध्येतावृत्ति (Scholarship) है, इसे चीन द्वारा अनुमोदित गेशे की अर्हता द्वारा स्थानापन्न (Replace) किया गया है। इसके साथ-साथ उन तिब्बती शिक्षकों पर कठोर प्रतिबद्ध लगाये जिन्होंने भारत में अध्ययन किया है और उन्हें उनके ज्ञान और अभ्यास के आधार पर बहुत अधिक महत्व दिया जाता हैं, विशेष रूप से वे जिन्हें दलाई लामा के उपदेश का अध्ययन करने और शिक्षाओं में भाग लेने का अवसर मिला था। ये बौद्ध भिक्षु काफी लंबे समय से टी.ए.आर. में बौद्ध मठों में शिक्षण कार्य नहीं कर पाए थे क्योंकि उनके बारे में ऐसा माना जाता है कि उन्हें ''भारत में गलत शिक्षा'' मिली है।[73]

वर्षा 2012 में, तत्कालीन टी.ए.आर. पार्टी के प्रमुख चेन क्वोओ ने और अधिक कड़े प्रतिबंध लगाए जब उन्होंने भारत में बोध गया जाने वाले तिब्बतियों पर क्रमबद्ध रूप से निगरानी अभियान शुरू किया था। बोध गया में पहली बार भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। भू-क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर दलाई लामा के प्रवास में रहने के दौरान उनकी गतिविधियों और कार्यकलाप पर किया जाने वाला यह सबसे कठोर कार्रवाई थी। इससे पूर्व तिब्बत के भीतर उनके प्रति निरंतर श्रद्धा व भक्ति का भाव रखने वाले व्यक्तियों को निशाना बनाकर उनके प्रति कठोर कार्रवाई की गई थी।[74]

तिब्बत लौटने पर सैकड़ों तिब्बती 'गायब' हो गए और उन्हें पकड़कर काफी लंबे समय तक सैन्य शिविरों और अन्यत्र रखकर उन्हें 'पुनः उपदेश से शिक्षित' किया गया। वृद्ध दम्पत्तियों को अलग कर दिया गया और उन्हें औषधि से वंचित रखा गया था और युवा तिब्बतियों, जिन्होंने यात्रा के दौरान अपने जीवनभर का धन संचय किया था, उनसे प्रवृत्त 'पुनः शिक्षा' देने की अवधि में शुल्क वसूला गया। कुछ परिवारों को कई सप्ताह और कई माह तक अपने प्रियजनों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। बाद में उन्हें सैन्य छावनी, कैम्प या अन्य स्थानों जैसे 'पुनः शिक्षा केंद्रों', विद्यालयों आदि में रखा गया था।

जुलाई 2014 में, जब दलाई लामा ने लद्दाख में उपदेश दिया तब चीनी सरकार ने उन्हें 'घृणा' और 'चरमपंथी कार्रवाई' के लिए उकसाने वाला बताया।

वर्ष 2017 में, हजारों तिब्बती तीर्थ यात्रियों को चीनी प्राधिकारियों ने भारत में दलाई लामा द्वारा प्रमुख उपदेश में सम्मिलित होने के लिए भारत की यात्रा करने के बाद उन्हें तिब्बत लौटने के लिए बाध्य किया था। चीन की कार्रवाई के बाद तिब्बत में तिब्बतियों को देश से बाहर जाने से रोकने के लिए अधिक व्यवस्थित उपाय किये गये।[75] सैकड़ों तिब्बती जो उपदेश सुनने के लिए कार्यक्रमों में उपस्थित होने से पहले धर्मशाला पहुंच चुके थे, वे दलाई लामा के उपदेश सुनने में सक्षम थे, लेकिन बहुत से अन्य लोग ऐसा करने में असमर्थ थे। एक तिब्बत निवासी ने कहा, ''तिब्बती तीर्थ यात्री सिसक-सिसक कर विलाप कर रहे थे और एक-दूसरे का आलिंगन कर रहे थे। उनका दिल टूट गया था और वे अपने धर्म गुरु के आगमन से पूर्व ही वहां से बाहर जाने के लिए बाध्य हुए।''[76]

''चीनी विचारधारा'' का प्रक्षेपण संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र और इससे बाहर

विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्रों में दलाई लामा की वैश्विक लोकप्रियता को देखते हुए, चीन ने 'चीनी विशेषताओं के साथ' बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं। चीन यहां तक कि तिब्बती धार्मिक अस्मिता के साथ-साथ अन्य धर्मों'' को निष्कासित करने के लिए विनाशकारी नीतियां भी अपना रहा है।[77]

बौद्ध धर्म को भू-राजनीतिक, सैन्य और भू-क्षेत्रीय विषयों में वर्चस्व कायम करने के राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शि-जिनपिंग ने कूटनीतिक उपकरण की तरह प्रयुक्त किया गया है। पवित्र स्थान जिसमें नेपाल स्थित गौतम बुद्ध की जन्मस्थली सहित

भारत के अन्य पवित्र तीर्थ स्थान विवादित क्षेत्र बन गए हैं जहां चीन 14वें दलाई लामा की महत्ता कम करने और अपने स्वयं के उम्मीदवार के पक्ष में समर्थन जुटाने, 'चीनीकरण' के अपने राजनीतिक एजेंडे को पेश करना चाहता है।

हाल के वर्षों में भारत के साथ, विशेषकर तिब्बत की सीमा से लगे हुए क्षेत्रों में तनाव बढ़ गया है। चीन ने अरूणाचल प्रदेश को अपने भू-भाग का भाग होने का दावा किया है जिसमें भारत के इस राज्य को 'दक्षिण तिब्बत' बताते हुए इसे छठे दलाई लामा के गृह नगर का स्वामित्व बताया गया है।

एक दशक से अधिक समय से, चीन ने सीमा पर भारतीय और भूटान के भू-भाग में घुसपैठ में वृद्धि कर दी है। जून, 2020 में, गलवान घाटी में सैनिक टुकड़ियों में टकराव हुआ जिसके परिणामस्वरूप 20 भारतीय सैन्यकर्मी और कम से कम चार चीनी सैनिकों की मृत्यु हो गई। पिछले पांच दशकों में उच्च तुगंता वाली सीमा के दोनों ओर दो परमाणु-सशस्त्र राष्ट्रों के बीच यह सर्वाधिक घातक टकराव था।

इसके परिणामस्वरूप चीन अपनी भू-भागीय परिधि से आगे बढ़कर पूरे हिमालय क्षेत्र में अपनी पहुंच का विस्तार कर रहा है क्योंकि यह इस क्षेत्र में दलाई लामा के प्रभाव को महत्वहीन करना चाहता है और उपमहाद्वीप में रहने वाले निर्वासित तिब्बती समुदाय को कमजोर करना चाहता है। चीन ने चीन और भारत के बीच सदियों पुराने संबंध को नई दिशा दी है जिसमें चीन की यात्रा करने वाले भारतीय द्विभाषियों और भारत में बौद्ध स्थलों की यात्रा करने वाले चीनी तीर्थयात्रियों को राजनीतिक युद्ध भूमि में खींच लाया है।

''आदर्श 'शउखांग' (समृद्धि) सीमा प्रतिरक्षा गांवों'' के विभिन्न समूहों का निर्माण के साथ-साथ, उन दो सीमा प्रतिरक्षा गांव जिनका निर्माण गत दो वर्षों के भीतर हुआ है। उन दो स्थानों से सह-संबद्ध है, जहाँ सन् 1962 में चीन-भारतीय युद्ध हुआ था। ये स्थान तवांग के सामने 'त्सोना' और अरुणाचल प्रदेश में वालोंग के सामने 'जायुल' है।

सन् 2014 में चीन ने श्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारत के प्रधान मंत्री का पद का कार्यभार संभालने के तुरंत बाद प्रकाशित नए मानचित्र पर अरुणाचल प्रदेश को अपने भू-भाग के अंश के रूप में सम्मिलित किया।[78] नए चीनी भूमि सीमा कानून के दिसंबर 2021 में लागू होने के अवसर पर, चीन ने घोषणा की कि इसने तिब्बती और चीनी अक्षरों में अरुणाचल प्रदेश में 15 स्थानों का नामकरण किया है, जिसे 'जंगनान'[79] (दक्षिण तिब्बत) की संज्ञा दी गई है।

जब शि-जिनपिंग ने अपनी सीमाओं को सुरक्षित करने साथ-साथ चीन की राष्ट्रीय सुरक्षा को सुरक्षित करने के बारे में वक्तवय दिया, तो वे अपने इरादे का महत्वपूर्ण संकेत भेज रहे थे। इतिहासकार और लेखक मैथ्यू एकेस्टर ने कहा कि तिब्बत में चकबंदी (समेकन) का अगला चरण ''सीमा का निर्माण करना और इस प्रकार भारत पर दबाव बढ़ाना होगा। यकीनन इसमें 1962 के युद्ध की गूंज सुनाई देती है – यह चीन में प्रत्यक्ष बोध है कि तिब्बत में स्थायित्व कायम रखने के साथ-साथ भारत में सीमा के मामलों में आक्रामक रूख अपनाने, की आवश्यकता है ताकि विरोध या खतरे की किसी भी स्थिति से निपटकर अंततः क्षेत्रीय प्रभुत्व कायम किया जा सके।[80]

सन् 2017 में धार्मिक उपदेश देने के प्रयोजनार्थ तवांग की यात्रा पर दलाई लामा के आने के प्रत्युत्तर में, चीन के विदेश मंत्रालय ने चेतावनी दी कि इससे ''चीन और भारत के मध्य सीमा क्षेत्रों की शांति एवं स्थायित्व और चीन-भारत संबंधों को गंभीर क्षति होगी।'' इसमें उल्लेख किया गया है कि दलाई लामा को ऐसे क्षेत्र में आमंत्रित कर जहां चीन और भारत के बीच भू-भागीय विवाद है, भारत ने ''तिब्बत से संबंधित मुद्दों पर अपनी प्रतिबद्धता का उल्लंघन किया और सीमा विवाद को और अधिक बढ़ा दिया है।''[81],[82]

इससे सीमा विवाद के मामले में भारत-चीन के मध्य संबंध रेखांकित होता है और साथ ही दलाई लामा के पुनः अवतार का विषय भी इसमें शामिल है। चीन द्वारा तवांग पर अपना दावा प्रस्तुत करने का तात्पर्य तिब्बत पर अपना दावा मजबूत करना है। हालाँकि, ''चीन के लिए, मैकमोहन रेखा जो वर्ष 1914 के शिमला समझौते और तिब्बतियों एवं ब्रिटिश इंडिया के मध्य हस्ताक्षरित करार से हुआ था यह औपनिवेशिक विरासत है जिसकी कोई वैधता नहीं है,'' यह कहना तिब्बती विश्लेषक शेरिंग चोंझुम भूटिया का हैं। ''इसके अलावा, मैकमोहन रेखा को मान्यता प्रदान करने से तिब्बत को चीन का 'अविच्छेद्य व अभिन्न हिस्सा' होने का दावा पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा और इसके परिणामस्वरूप सन् 1950 में इस क्षेत्र की 'आजादी' की विधिमान्यता समाप्त हो जाएगी।''[83]

शि-जिनपिंग ने बौद्ध धर्म को अपने राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कूटनीतिक उपकरण के रूप में प्रयोग किया है।

तिब्बती बौद्ध धर्म के अस्तित्व और दलाई लामा के उत्तराधिकार में मंगोलिया की भूमिका

मंगोलिया तिब्बती बौद्ध धर्म को मुख्य धर्म के रूप में अपनाने वाला सबसे बड़ा स्वतंत्र देश है। यूरेशिया में 10 मिलियन से अधिक मंगोलों की आबादी रहती है, इस देश में तिब्बत सहित विश्व के किसी भी देश से अधिक तिब्बती बौद्ध रहते हैं।

मंगोलिया निम्नलिखित दो प्रमुख कारणों से भावी उत्तराधिकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है:

- तिब्बत के बाहर से बनने वाले दो दलाई लामाओं में से केवल एक का जन्म मंगोलिया में हुआ था;
- मंगोलिया के आध्यात्मिक नेता, के अवतारों की पहचान करने वाले प्राधिकारी जेजुन धंबा कूटुक्टु (बोग्ड खान) ने ऐतिहासिक रूप से दलाई लामा को शामिल किया है।

सन् 2016 में 14वें दलाई लामा ने घोषणा की कि 10वें जेटसन धंबा का पुनर्जन्म मंगोलिया में हुआ है। 9वें जेटसन धंबा के निधन से पूर्व उन्होंने यह कहते हुए एक वसीयतनामा छोड़ दिया कि उनका पुनर्जन्म मंगोलिया में होगा, और यह कि उनके पुनर्जन्म की मान्यता केवल दलाई लामा द्वारा दी जाएगी "जो मेरे सभी जन्मों में मेरे मौलिक गुरु हैं।"[84] इस मान्यता में तिब्बती बौद्ध परंपरा को बरकरार रखा गया और चीन से बाहर दलाई लामा के उत्तराधिकार के लिए 'पूर्वाभ्यास' के रूप में अपने स्वयं की चयन प्रक्रिया में चीन द्वारा हस्तक्षेप करने के प्रयास का विरोध किया गया।

मंगोलिया में अनौपचारिक सूत्रों के अनुसार, 9वें जेटसन धम्पा का जिस रात निधन हुआ, उनके निधन पर "शोक व्यक्त करने" के लिए वहाँ पहुचने वाला प्रथम शिष्टमंडल चीनी दूतावास से था। एक संसूचित तिब्बती सूत्र का कहना है कि चीनी शिष्टमंडल में शामिल लोगों ने यह संदेश दिया कि आध्यात्मिक नेता का पुनर्जन्म के संबंध में निर्णय दलाई लामा द्वारा नहीं किया जाना चाहिए। उसी स्रोत के अनुसार, चीनी प्राधिकारियों का इरादा दलाई लामा द्वारा बालक को मान्यता दिये जाने पर चीन के भीतर अपने स्वयं के बोग्ड खान उम्मीदवार को संस्थापित करना था।

नवंबर 2016 में, दलाई लामा पांच दिवसीय यात्रा पर उलानबातर गए और अपनी यात्रा के बाद, उन्होंने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा: "यह बहुत स्पष्ट है कि पुनर्जन्म अब मंगोलिया में हुआ है।"[85] हालांकि दलाई लामा ने पुनः अवतार के रूप में चयनित बच्चे की पहचान के बारे में सार्वजनिक रूप से घोषणा यह कहते हुए नहीं की कि बालक को अनेक वर्षों की तैयारी करने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया के संबंध में उस समय से नहीं के बराबर अथवा कोई जानकारी प्रकट नहीं हुई है।[86] और मंगोलिया के शक्तिशाली पड़ोसी देश चीन द्वारा मंगोलिया के नाजुक लोकतंत्र पर दबाव के संदर्भ में चीन का नाम नहीं आया है। राजनीतिक स्थिति की स्पष्ट संवेदनशीलता के अलावा, यह जब तक बालक में समुपयुक्त गुणों का प्रकटन व उद्भाषण नहीं हो जाता है, 'टुल्कू' की पहचान और उसे चिह्नित किए जाने के संबंध में दलाई लामा की सावधानी के अनुरूप है।

भू-बद्ध मंगोलिया जो संसाधनों के लिए चीन और रूस पर आश्रित है, चीन वहाँ अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए उस पर दबाव बनाने के लिए कई रणनीतियों को कार्यान्वित करता है।[87] सन् 2016 में चीन ने दलाई लामा के आगमन और 10वें जेटसन धम्बा की पहचान में उनकी भागीदारी का प्रत्युत्तर मंगोलिया के लिए प्रस्तावित 4.2 बिलियन डालर का ऋण निरस्त करके दिया। यह मंगोलियाई लोगों के लिए बीजिंग के साथ नजदीकी सम्पर्क स्थापित करने के मार्ग में एक बड़ा आघात थी। चीन ने दलाई लामा के साथ बातचीत करने के मामले में अपना विरोध जताते हुए मंगोलिया में तिब्बत के प्रचार में भी तेजी लाई है।[88]

मंगोलियाई विदेश मंत्री ने दिसंबर 2016 में कहा था कि पुनर्जन्म धार्मिक प्रतिष्ठान का विषय है और इसके लिए "किसी बाहरी प्रभाव या भागीदारी की आवश्यकता नहीं है।"[89] इसके अलावा मंगोलिया की मीडिया ने यह उल्लेख किया है कि 10वां पुनः अवतार मंगोलियाई लामाओं द्वारा गद्दी पर बिठाया जाएगा, जो बालक की शिक्षा के लिए भी उत्तरदायी होगा।[90]

मंगोलिया के साथ भारत की कूटनीति में, बौद्ध धर्म हमेशा एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है, और भारत ने बौद्ध धर्म की संरक्षण में अहम भूमिका निभाई और साम्यवादी (कम्यूनिस्ट) युग में दलाई लामा के साथ संबंधों को सुगम बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। मई 2015 में, नरेंद्र मोदी मंगोलिया का दौरा करने वाले पहले भारतीय प्रधान मंत्री थे। श्री मोदी ने मंगोलिया और भारत के मध्य बौद्ध धर्म के संबंध पर बल दिया और बोधगया, जहां महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था, वहाँ से बोधि वृक्ष का एक छोटा सा पौधा ले जाकर गंडेन्टेगचिनलेन बौद्ध मठ में उन्होंने एक प्रतीकात्मक प्रस्तुति दी।

यद्यपि, शि-जिनपिंग के क्षेत्र से होकर सड़क ('Belt and Road Initiative') की पहल करते हुए बड़े स्तर पर ऋण सहित आर्थिक प्रभाव के कारण मंगोलिया चीन से लिए गए भारी कर्ज में फँस गया है।[91] ये ऋण सांस्कृतिक प्रचार यथा कन्फ्यूशियस संस्थान, दूरदर्शन और रेडियो पर प्रसारण तथा सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना कार्यक्रम के कारण चीन से मंगोलिया द्वारा लिए गए ऋणों में और अधिक वृद्धि हुई है।

हालिया दुःखद घटना में, सुविख्यात मंगोलियाई लेखक, पत्रकार और मानवाधिकार कार्यकर्ता, मुन्खबेयर, जो चीन के साथ घनिष्ठ संबंध के कट्टर विरोधी है, उसे मार्च 2022 में गिरफ्तार कर लिया गया था। मुन्खबेयर ने चीन में होने वाले मानवाधिकार के उल्लंघन का विरोध करने के लिए संगोष्ठियों (सेमिनार) और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया था और मंगोलियाई प्रधान मंत्री लुवसन्नामसरीन ओयुन-एर्डीन के कथित तौर पर चीन के साथ नजदीकी संबंध होने के कारण उनके इस्तीफे की भी मांग की थी।[92]

दलाई लामा को कम आंकने का प्रयास चीन समर्थक समूह द्वारा

पश्चिम देशों में दलाई लामा का विरोध

वर्ष 1996-97 से, एक अलगाववादी समूह जिसे अंतर्राष्ट्रीय शुग्डेन समुदाय कहा जाता है' (जिसे इसके कुछ पूर्ववर्ती प्रैक्टिशनर सम्प्रदाय की संज्ञा देते हैं) ने दलाई लामा जहां कहीं भी अपनी यात्रा पर जाते थे, उनके पीछे जाना और शोर-शराबा करना उनका काम था, और अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप में उनके उपदेशों के विरुद्ध आक्रामक धरना प्रदर्शन कर उन्हें उकसाते थे।[93]

विभिन्न देशों की पुलिस का कहना था, कि दलाई लामा जिस भी किसी देश की यात्रा पर जाते थे वहां शुगडेन समुदाय (जिसमें पश्चिमी देशों के साथ-साथ तिब्बती भी शामिल थे) के लोग उनका 'पीछा' करते थे, और उसी होटल में जाकर रहने का तथा संबंधित स्थानों में प्रवेश और निकास के स्थानों में प्रवेश पाने का प्रयास करते थे।

सन् 2016 में अन्तर-राष्ट्रीय शुगडेन समुदाय ने धरना प्रदर्शन समाप्त कर दिया और न्यूज एजेंसी रॉयटर्स द्वारा इस बात रहस्योघाटन किया कि इस संप्रदाय को कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थन प्राप्त था।[94] सन् 2014 में चीनी अधिकारियों को एक आंतरिक कम्युनिस्ट पार्टी का दस्तावेज वितरित किया गया। इस विभागीय दस्तावेज ने शुगडेन के मुद्दे को 'दलाई गुट के साथ हमारे संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मोर्चा' कहा गया।[95]

एक तिब्बती बौद्ध भिक्षु जिसका नाम लामा त्सेता था और जो दिल्ली में शुगडेन संगठन में मशहूर थे और बाद में वह सूचना प्रदाता बने, उनका कहना था – "चीनी लोग उन्हें (शुगडेन के अनुयायियों) को दलाई लामा को झूठा सिद्ध करने के लिए एक युक्ति के रूप में उपयोग कर रहे हैं, ताकि वे तिब्बती बौद्ध धर्म को कमजोर करने और तिब्बती समाज को विखंडित करने के अपने उद्देश्य में सफल हो जाएं।[96]

दलाई लामा को दुर्बल बनाने के लिए व्यवस्थित विचारधारा और राजनीतिक अभियान के भाग के रूप में तुष्टिकरण को बढ़ावा देकर बीजिंग ने तिब्बत के भीतर दीर्घकालिक रणनीतियां बनाई हैं। चीनी अधिकारी तिब्बतियों का अनुनयन करते हैं कि वे शुगडेन को वित्तीय प्रलोभन देकर उन्हें मनाएं।[97]

कुछ मामलों में, शुगडेन से जुड़े छोटे बौद्ध मठों में बहुत अधिक मात्रा में धनराशि जुटाई गई है चीनी सरकार से वहीं दूसरी ओर बड़े मठों में जहां भारी मात्रा में बौद्ध भिक्षु है वहां इतनी राशि उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा, तिब्बत के विभिन्न हिस्से में स्थित बौद्ध मठों में अक्सर निवासी बौद्ध भिक्षुओं की इच्छा के विरूद्ध बौद्ध मठों में बड़े पैमाने पर शुगडेन की प्रतिमाएं संस्थापित की गई हैं।

इस रणनीति में बीजिंग की नीतियों के प्रमुख अवयव परिलक्षित होते हैं। जिनका उद्देश्य धार्मिक आस्था को विभक्त करने के साथ-साथ संप्रदाय के आधार पर समुदायों को विभाजित करना है।

"चीन के लोग उनका (शुगडेन अनुयायियों) का प्रयोग दलाई लामा को झूठा साबित करने के लिए एक युक्ति के रूप में कर रहे हैं जिससे तिब्बती बौद्ध धर्म को कमजोर करने और तिब्बती समाज को विखंडित करने के अपने लक्ष्यों में सफल हो जाएं।"

चूंकि चीन ने तिब्बत के भीतर और जनवादी गणराज्य के बाहर दोनों जगह पुनर्जन्म की प्रक्रिया पर अपना नियंत्रण मजबूत कर दिया है, इसलिए शुगडेन समूह ने मंगोलिया में अपनी गतिविधियों को तीव्र कर दिया है, और मंगोलियाई राजनीति को परिवर्तित कर चीनी अपने राजनीतिक और व्यावसायिक हितों को साध रहा है।

भारत में, चीन ने शुगडेन के प्रति निष्ठा रखने वाले लोगों का प्रयोग अपना प्रभाव फैलाने में किया है, जिसका विशिष्ट बौद्ध मठों में निष्ठा उत्पन्न करना है। ये ऐसे बौद्ध मठ हैं जिन्हें भविष्य में दलाई लामा द्वारा चयनित उम्मीदवार का समर्थन करने के लिए बुलाया जा सकता है।

भारतीय विश्लेषकों ने इस बात की संभावना व्यक्त की है कि चीनी दलाई लामा शुगडेन के अनुयायियों की श्रेणी से उदीयमान हो सकते हैं। वे कुछ निर्वासित वरिष्ठ वंशानुगत व्यक्तियों के खतरे की ओर भी इशारा करते हैं, जो तटस्थ है और चीनी प्राधिकारियों के लिए हितकारी होंगे।

ऐसा एक व्यक्ति जो शुगडेन आंदोलन से जुड़ा हुआ है, वह व्यक्ति भारत में रहने वाला कुंडलिंग है, जिसे तिब्बतीं 'नगा लामा' के रूप में जानते हैं, जिसका अर्थ होता है "मैं लामा", यह स्व-घोषित प्रास्थिति की और संदर्भित है, यद्यपि उन्हें औपचारिक तौर पर कुंडेलिंग रिनपोचे के पुनः अवतार के रूप में मान्यता नहीं दी गई है।

सन् 2008 में पूरे तिब्बत में विनाशकारी हमले के अति तीव्र होने के समय में शुगडेन के समर्थकों ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की जिसमें 'नगा लामा' ने दलाई लामा को "संयुक्त राज्य अमेरीका के खुफिया विभाग का दलाल" कहा था। इससे ऐसे समय में दलाई लामा के खिलाफ बीजिंग की राजनीतिक संघर्ष को अपेक्षित स्तर पर प्रबल समर्थन मिला जब पूरी दुनिया में तिब्बत के लोग बीजिंग ओलंपिक के खिलाफ आवाज उठा रहे थे, और पूरे पठार में सुरक्षा बलों द्वारा तिब्बतियों के मारे जाने का शोक मना रहे थे।

नेपाल में सुरक्षा दिया जाना

चीन द्वारा पूरे देश की 'राष्ट्रीय सुरक्षा' सहित तिब्बत को सुरक्षित रखे जाने का कार्य को नेपाल तक विस्तारित किया गया है, जिसके साथ चीन सदियों पुराने धार्मिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध हैं। अपनी समृद्ध बौद्ध विरासत जिसमें बौद्ध स्तूप, लुम्बिनी में भगवान बुद्ध की जन्मस्थली, इसके प्राचीन मंदिर और गुफाएं जहां तिब्बत के योगी ध्यान साधना में रहते थे शामिल हैं। नेपाल अब पी.आर.सी. के तिब्बतियों के अंतरराष्ट्रीय दमन का मुख्य स्थान बन गया है।

नेपाल को नियंत्रित करने के बीजिंग के प्रयास स्पष्टतः प्रामाणिक हो गए हैं जब से नेपाल सन् 2017 में औपचारिक तौर पर 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' में शामिल हो गया है। यह ऐसी सदस्यता है जो नेपाल की बुनियादी ढांचे और परियोजनाओं में कई मिलियन डॉलर चीनी निवेश का आश्वासन लेकर आया।[98]

वर्ष 2019 में, शि-जिनपिंग की काठमांडू यात्रा से नेपाल और चीन के बीच औपचारिक संबंध स्थापित हो गये और यहाँ तक खबर आई कि शि-जिनपिंग का पिछली संयुक्त नेपाल की कम्यूनिस्ट पार्टी की सरकार के बारे में क्या विचार है। ऐसी रिपोर्ट आई कि नेपाल के अधिकारी और नेता जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री ओली भी शामिल हैं उनका चीनी सर्वोच्च नेता की घोषणाओं के बारे में 'शिक्षा' दी गई, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र की संप्रभुता और न्यायिक स्वतंत्रता के बारे में प्रबल आक्रोश उत्पन्न हुआ।[99]

चीन के निरंतर बढ़ते हुए निवेश और वहाँ से आने वाली सहायता के बीच प्रत्यक्ष सह-संबंध और नेपाल में रहने वाले तिब्बतियों की दुर्बलताओं को काफी लंबे समय से बीजिंग ने स्वीकार किया है, जिसमें इसके द्वारा किए गए निवेश को नेपाल द्वारा "तिब्बती अलगाव वादियों के विरूद्ध सुरक्षा उपाय करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका" के बदले पुरस्कार माना गया है।[100]

पूर्व में चीन ने नेपाल की सरकार पर दबाव बनाया है कि वह नेपाल में रहने वाले तिब्बती समुदाय के लोगों के निवास को अवैध ठहराए। सन् 1994 से ही नेपाल ने तिब्बतियों को जारी शरणार्थी पहचान पत्र जारी करना या नवीनीकरण करना बंद कर दिया, और दलाई लामा के कार्यालय एवं तिब्बती कल्याण कार्यालय को वर्ष 2005 में जबरन बंद कर दिया गया। कई वर्षों तक तिब्बतियों द्वारा किए जाने वाले शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन को नेपाली प्राधिकारियों द्वारा बंद कर दिया गया और सांस्कृतिक एवं धार्मिक सभाओं, बैठकों को 'चीन-विरोधी' करार दिया गया और उन पर प्रतिबंध लगा दिया गया।[101]

सन् 2021 में प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा के निर्वाचित होने से ऐसा प्रतीत होता है कि हाल ही में 6 जुलाई 2022 को दलाई लामा का जयंती सहित अन्य अवसरों पर तिब्बती सभाओं पर लगाए गए प्रतिबंधों में ढील दी गई है। [102]

तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार पर चीनी आक्रमण के बढ़ने पर समुपयुक्त अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया का विषय ऐसे समय में उठा जब पी.आर.सी. अपनी सीमाओं से बाहर उत्तरोत्तर अपना अंतरराष्ट्रीय दमन बढ़ा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया उत्पन्न करना

हाल के संदर्भ में विश्व भर में सरकारों के लिए बहुत अधिक प्रबल व सशक्त तैयारी और बहुपक्षीय समन्वय विकसित करना है जिससे इसका अनुमान लगाया जा सके कि आगे क्या होना है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कानून बनाना कि दलाई लामा का उत्तराधिकार केवल तिब्बतियों, का मामला है, तिब्बती बौद्ध समुदाय और विशेष रूप से दलाई लामा के बौद्ध अनुयायी और गैडेन फोड्रंग ट्रस्ट तक सीमित विषय है। उत्तराधिकार की प्रक्रिया में चीन के हस्तक्षेप का स्पष्ट तौर पर विरोध किए जाने की तत्काल आवश्यक है।[103]

प्रभावी रूप से ऐसा करने के लिए, प्रत्येक देश को अनिवार्यतः पहले यह निर्धारित करना चाहिए कि दलाई लामा के उत्तराधिकार और तिब्बत द्वारा चुने गये वैध दलाई लामा से संबंधित विषय वैश्विक महत्व का मामला है और यह सीधे तौर पर तिब्बत की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत के अस्तित्व से जुड़ा है।

अपने स्वयं के उत्तराधिकार पर दलाई लामा का प्राधिकार और तिब्बती बौद्ध धर्म के भविष्य के उत्तरोत्तर मान्यता दी जा रही है और सरकारों द्वारा सार्वजनिक रूप से इसकी स्वीकृति मिल रही है।

संयुक्त राज्य अमेरिका: यह विषय अमेरिका में तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम (दिसंबर 2020) से उठा है, जिसमें उल्लेख है कि दलाई लामा के पुनर्जन्म के संबंध में निर्णय लेने में भूमिका-निर्वाह तिब्बती बौद्ध प्रणाली में दलाई लामा और अन्य तिब्बतियों द्वारा किया जाना है न कि किसी सरकार द्वारा।

तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम में आधिकारिक नीति बनाई गई है जिसमें यह माना गया है कि दलाई लामा का उत्तराधिकार पूर्णतः धार्मिक विषय है जिसके संबंध में दलाई लामा और तिब्बती बौद्ध समुदाय द्वारा ही निर्णय लिया जा सकता है।[104] इस अधिनियम के अधीन, यदि चीनी नेता भावी दलाई लामा की पहचान करने का प्रयास करते हैं तो उन्हें उन प्रतिबंधों का सामना करना पड़ेगा जिसमें उनकी परिसंपत्तियों का सील होना और अमेरिका में उनके प्रवेश की अनुमति नहीं दिया जाना शामिल है। अमेरिकी विभाग को दुनिया भर में समान विचारधारा वाले देशों के साथ काम करने का कार्यभार सौंपा गया है ताकि वह चीन द्वारा अपने स्वयं के विश्वासघाती दलाई लामा को संस्थापित करने की योजनाओं को पीछे धकेला जा सके। इस कानून से वर्ष 2002 की ऐतिहासिक तिब्बती नीति अधिनियम को भी बल मिला है।[105]

संयुक्त राज्य अमेरिकी कांग्रेस और सीनेट में क्रमशः फरवरी 2022 और जुलाई 2021 में पारित दो विधेयकों में दलाई लामा के उत्तराधिकार या पुनर्जन्म के साथ-साथ तिब्बती बौद्ध धर्म के अनुयायियों की धार्मिक स्वतंत्रता को पुनः अभिस्वीकृति दी गई है। यूएस इनोवेशन एंड कॉम्पटिशन एक्ट (सं. राज्य अमेरिकी नवोन्मेष और प्रतिस्पर्धा अधिनियम) की धारा 3307 के अधीन विधेयक में पुनः अभिकथित किया गया है कि चीन जनवादी गणराज्य की सरकार या किसी अन्य सरकार द्वारा "14वें दलाई लामा और भावी दलाई लामा के उत्तराधिकारी या पुनर्जन्म को मान्यता देने की प्रक्रिया में किसी प्रकार का हस्तक्षेप तिब्बती बौद्ध और तिब्बत के लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के स्पष्ट दुरुपयोग का प्रतिनिधित्व करेगा।"

यूरोपीय संघः हालांकि किसी भी यूरोपीय सदस्य देश ने अभी तक इस तरह का कोई विधान नहीं बनाया है। यूरोपीय संघ ने अपनी स्थिति को पुनः स्पष्ट किया है कि चीन को तिब्बती बौद्ध परंपरा के अनुसार 14वें दलाई लामा के उत्तराधिकार का सम्मान करना चाहिए।[106]

यूरोपीय संसद के अनेक सदस्यों द्वारा पूछे गए प्रश्न के लिखित उत्तर में, यूरोपीय संघ के विदेश मामलों के प्रमुख और यूरोपीय आयोग के उपाध्यक्ष, जोसेफ बोरेल ने कहाः "यूरोपीय संघ ने लगातार संकेत दिया है कि यह चीन उम्मीद करता है कि वह तिब्बती बौद्ध मानकों के अनुसार दलाई लामा के उत्तराधिकार का सम्मान करें। 1 अप्रैल 2019 को हुई पिछली बैठक में भी इस निर्णय को याद किया गया। यूरोपीय संघ इस विषय पर अपना निर्णय व्यक्त करना जारी रखेगा।"[107]

धार्मिक या आस्था की स्वतंत्रता के संवर्धन और संरक्षण पर यूरोपीय संघ के दिशानिर्देश उल्लेख है कि समुदायों को "धार्मिक समूहों द्वारा उनके मूलभूत मामलों में उनके आचरण के अनुसार अभिन्न कार्य" करने का अधिकार प्राप्त है। इन अधिकारों में कानूनी व्यक्तित्व और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप शामिल हैं किन्तु वह इन तक ही सीमित नहीं है ख्३ण्,। इसमें अपने नेताओं को चुनने और उन्हें प्रशिक्षित करने के अधिकार सम्मिलित हैं [...]।[108]

बेल्जियमः जनवरी 2020 में बेल्जियम के विदेश मंत्रालयों ने भी इसे अभिकथित किया है कि तिब्बती धार्मिक समुदाय पर निर्भर है कि वह चीन के प्रयासों को अस्वीकृत करते हुए भावी दलाई लामा का चयन करें। बेल्जियम के विदेश और रक्षा मंत्री फिलिप गोफिन ने कहा – "तार्किक रूप से यह तिब्बती धार्मिक समुदाय पर निर्भर है कि वह अस्थायी प्राधिकारियों से किसी प्रकार का हस्तक्षेप के बिना अपने उत्तराधिकारी को नामित करें।"[109]

नीदरलैंडः इसी तरह, वर्ष 2019 के उत्तरार्द्ध में प्रेषित डच विदेश मंत्री स्टेफ ब्लौक ने आधिकारिक पत्र में उल्लेख किया, "इस मंत्रीमंडल का निर्णय है कि यह तिब्बती धार्मिक समुदाय का ही दायित्व है कि वह दलाई लामा के भावी उत्तराधिकारी की नियुक्ति करें।"[110]

जर्मनीः मार्च 2020 में, संघीय विदेश कार्यालय में जर्मनी के राज्य मंत्री, नील्स एनेन ने अपने वक्तव्य में कहा – "फेडरल सरकार की राय है कि धार्मिक समुदाय अपने कार्य का विनियमन स्वायत्तता रूप से नियंत्रित कर सकते हैं।" एनेन ने आगे कहा – "इसमें स्वयं ही धार्मिक नेताओं के बारे में अवधारणा करने का अधिकार शामिल है।"[111]

भारतः India भारतीय टिप्पणीकार विभिन्न कारकों के संदर्भ में दलाई लामा और तिब्बत के बारे में भारत के रुख के महत्व को उजागर करते हैं। भारत में बड़ी संख्या में निर्वासित तिब्बती आबादी, इसकी बौद्ध धर्म की विरासत का पुनरुद्धार करना[112] और चीन के साथ सीमा संघर्ष को स्थायित्व प्रदान करने संबंधी भारत के प्रयास आदि इन कारकों में शामिल है।

दलाई लामा की जयंती पर वर्ष 2022 और 2021 में भारत के प्रधानमंत्री मोदी की जनसभा का उद्धरण देते हुए बहुत से विश्लेषकों ने भारत की नीति की तात्कालिक समीक्षा करने की आवश्यकता की ओर इशारा किया और इस बात की वकालत करते हैं कि भारत को दलाई लामा के उत्तराधिकार की अखंडता बनाए रखने की महत्ता के संबंध में और अधिक मुखर होना चाहिए।[113]

विभिन्न सरकारों को सिफारिशें

- विधान बनाना जैसे तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम 2020[114] – जिसमें इस बात को मान्यता दी गई है कि किसी भविष्यगत दलाई लामा सहित तिब्बती बौद्ध धर्म के नेताओं की पहचान करने और उन्हें स्थापित कराने का कार्य पूर्णतः तिब्बती बौद्ध धर्मावलंबियों के निर्णय पर छोड़ा जाना चाहिए, जिसमें चीन की सरकार की ओर से किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाए।
- 14वें दलाई लामा को उनके उत्तराधिकार के विधिक प्राधिकार के विषय में उन्हें सहयोग करने के लिए सार्वजनिक निर्णय करना और तिब्बती बौद्ध धर्म के धार्मिक नेताओं के चयन और उनकी नियुक्ति में चीन जनवादी गणराज्य द्वारा किए जाने वाले किसी भी प्रयास का विरोध करना।
- तिब्बती बौद्ध धार्मिक नेताओं के चयन को मान्यता देते हुए बहुपक्षीय मंचों पर समान विचारधारा वाली सरकारों के साथ ठोस समन्वित कार्रवाई के संबंध में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के अनुसार, केवल दलाई लामा और तिब्बती बौद्ध समुदाय द्वारा निर्णय लिया जाएगा।
- चीनी अधिकारियों से आग्रह करना कि अनुच्छेद 36 जिसमें यह अपेक्षा की गई है कि तिब्बती बौद्ध धर्म में जीवित बौद्ध के उत्तराधिकार का अनुमोदन सी.सी.पी. द्वारा किया जाना सहित वर्ष 2017 के धार्मिक कार्यों के विनियमों को तत्काल संशोधन किया जाए या उनको निरस्त किया जाए।
- तिब्बती लोगों द्वारा धर्म या मत की स्वतंत्रता जिसमें "तिब्बती बौद्ध धर्म में जीवित बुद्धों के पुनर्जन्म के प्रबंधन संबंधी उपाय" शामिल हैं, जिसमें तिब्बती बौद्ध पुनःअवतार के लिए चीनी राज्य का अनुमोदन अपेक्षित है, और इनसे तिब्बतियों के अधिकार का उल्लंघन होता है, उन सभी कानूनों और नीतियों को निरस्त या संशोधित करें। वस्तुतः तिब्बती बौद्ध धर्म में जीवित बौद्ध के पुनर्जन्म के प्रबंधन में उल्लेख है कि चीन से बाहर तिब्बत बौद्ध के पुनः अवतार को अवैध माना गया है।
- चीनी प्राधिकारियों से आग्रह करना कि तिब्बत के 11वें पेंचन लामा, गेधुन चुइकी नीमा के ठिकाने और उनकी कुशलता का प्रमाण प्रदान करने का निवेदन करना और किसी स्वतंत्र निगरानी की मांग करना जिसे अपनी स्थिति की पुष्टि करने के लिए तत्काल अभिगम उस सीमा तक दी जाए कि वह अपने अधिकारों का प्रयोग कर सके।
- चीन द्वारा प्रक्षेपित उम्मीदवार पेंचन लामा, ग्यालत्सेन नोर्बू की उम्मीदवारी को नामंजूर करना।
- तिब्बत की तात्कालिक स्थिति से सार्थक रूप से निपटने के लिए विशेष समन्वयक, उच्च स्तरीय तिब्बत नीति सलाहकार, तिब्बत संपर्क अधिकारी या तिब्बत डेस्क की स्थापना करना।
- दलाई लामा के उत्तराधिकार और सी.टी.ए. तथा भारत में तिब्बती सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाओं के संरक्षण के विषय में भारत सरकार को द्विपक्षीय सहयोग प्रदान करना।
- मंगोलिया को अपने लोकतंत्र, अपने बौद्ध संस्थानों और आध्यात्मिक गुरु जेट्सन धाम्बा खुटुक्टु को बाहरी हस्तक्षेप से सुरक्षा के लिए सहयोगात्मक स्थिति का निर्माण करना।
- चीनी अधिकारियों से आग्रह करना कि वे सिविल और राजनीतिक अधिकारों से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का तत्काल अनुसमर्थन करें।
- चीनी प्राधिकारियों से निवेदन करना कि वे धार्मिक स्वतंत्रता या आस्था की आजादी के संबंध में संयुक्त राष्ट्र के विशेष संवक्ता तक तत्काल सार्थक और निर्बाध अभिगम प्रदान करें।
- तिब्बतियों के आत्म निर्णय के अधिकार की शांतिपूर्ण वकालत सहित उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को पुनः अभिकथित करें।
- तिब्बती धार्मिक हस्तियों, धर्मगुरुओं, आलोचकों, कार्यकर्ताओं, मानवाधिकार प्रतिरक्षकों और शांतिपूर्वक अपने सांस्कृतिक एवं धार्मिक अधिकारों का प्रयोग करने वाले सभी व्यक्तियों के खिलाफ मनमाने ढंग से की गई गिरफ्तारी, अभियोजन, यातना और अन्य उल्लंघनों जो क्रमबद्ध रूप से उनके विरूद्ध की जाने वाली कार्रवाई का अन्त करने के लिए सदस्य देश चीनी प्राधिकारियों पर दबाव बनाएं।

परिशिष्ट

(A) चीन के दलाई लामा उत्तराधिकार में व्यक्तिगत भूमिकाएँ

निम्नलिखित व्यक्तियों जिनकी पहचान इतिहासकार क्लॉड आरपी द्वारा की गई है उनके द्वारा भावी उत्तराधिकार प्रक्रिया में महत्वपूर्ण या लघु भूमिका का निर्वाह किए जाने की संभावना है। उदाहरणार्थ किसी उम्मीदवार का समर्थन करना या सार्वजनिक रूप से इस प्रक्रिया का समर्थन करना। चीनी पेंचन लामा ग्यालत्सेन नोर्बू को नीचे दी गई सूची में सम्मिलित नहीं किया गया है क्योंकि उत्तराधिकार प्राप्ति के मामले में उनकी भूमिका की चर्चा अन्यत्र की गई है।[115]

सोनम फुनसोंग, 7वें रेटिंग रिनपोचे

सन् 2000 में रेटिंग बौद्ध मठ के बौद्ध भिक्षुओं ने विरोध किया,[116] जब चीन ने सोनम पिनसोंक को 7वें रेटिंग पुनर्जन्म के रूप में गद्दी पर बिठाया। 14वें दलाई लामा ने न तो इसका अनुमोदन किया न ही चीन की पसंद का समर्थन किया।

रेटिंग रिनपोचे दलाई लामाओं की अनुपस्थिति या उनके अल्पसंख्यक होने के दौरान तिब्बत का प्रबंधन करने के लिए सशक्त उच्च श्रेणी के अवतारों में से एक है। पूर्ववर्ती रेटिंग अवतारों ने अन्य अवतार के लामाओं प्रमुखतः सन् 1933 में मंगोलिया के आध्यात्मिक पितृसत्तात्मक 9वें जेत्सुन धाम्पा को भी मान्यता दी है।

5वें रेटिंग रिनपोचे ने 13वें दलाई लामा के निधन के बाद तिब्बत के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया और उन्होंने 14वें दलाई लामा की तलाश में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

रेटिंग रिनपोचे और दलाई लामा के बीच घनिष्ठ ऐतिहासिक संबंध और अवतार संबंधी सांकेतिक महत्व को देखते हुए, चीन द्वारा स्थापित रेटिंग से अपेक्षा किए जाने की संभावना है कि वे किसी भी उत्तराधिकार की प्रक्रिया में सांकेतिक रूप से महत्वपूर्ण राजनीतिक भूमिका का निर्वाह करे।

जनवरी, 2013 में, चीन ने वर्तमान रेटिंग को तिब्बत के सी.पी.पी.सी.सी. का सर्वाधिक युवा सदस्य बनाया। इसके बाद, उस किशोर बालक ने 'चाइना डेली' समाचार पत्र को बताया कि वह "देशभक्ति के मामले में रेटिंग की वंशावली और धर्म के प्रति प्रेम को अक्षुण्ण रखेगा"[117] और उसने चीनीकरण की महत्ता पर बल दिया और "चीनी राष्ट्रीय जागरूकता प्रभावी रूप से बनाने के लिए अधिकांश बौद्ध भिक्षुओं के मार्गदर्शन के बारे में बात की।"[118]

अमचोक (अचोक) रिनपोचे

तिब्बत की निर्वासित सरकार के पूर्ववर्ती वरिष्ठ सदस्य अमचोक रिनपोचे सन् 2015 में तिब्बत लौटे और उसने घोषणा की कि वह चीनी नागरिक बन गये हैं।

सन् 1944 में जन्म लेने वाले अमचोक रिनपोचे सन् 1959 में निर्वासित हो गये और धर्मशाला स्थित तिब्बती कृतियां और अभिलेखागार के पुस्तकालय[119] के निदेशक के रूप में काम किया। सर्वप्रथम वह निर्वासित तिब्बतियों के साथ बातचीत करने के लिए यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट द्वारा किए गए प्रयास के रूप में सन् 1982 में चीन वापस गये, राज्य द्वारा संचालित समाचार पत्र 'द ग्लोबल टाइम्स ने घोषणा की कि ऐसा करके उसने दलाई लामा को 'अवमानित' किया था। तिब्बतियों को इस बात की समझ है कि अमचोक रिनपोचे की वापसी का अभिप्राय ऐसी किसी चीज से नहीं है, और यह कि वे और अन्य व्यक्ति जो घर वापसी का निर्णय लेते हैं, वे धार्मिक और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।[120]

सन 1987 में, अमचोक रिनपोचे बीजिंग में पुनर्जन्म लामा के निमित्त संस्थान जिसकी स्थापना 10वें पेंचन लामा द्वारा की गई थी, में एक वर्ष तक रहकर वहाँ अध्यापन कार्य किया।

फापाला गेलेक नामग्येल

जाम्बालिंग बौद्ध मठ फागपाल्हा के प्रमुख लामा के पुनर्जन्म के रूप में, चीन द्वारा तिब्बत पर आक्रमण करने के तत्काल बाद कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया। वह 'छमडो गुट' के वरिष्ठ सदस्यों में से एक है और उसे छमडो फागपाल्हा के नाम से भी जाना जाता है।

फापाला 13वीं सी.पी.पी.सी.सी. राष्ट्रीय समिति के उपाध्यक्ष हैं और वे बुद्धिस्ट एसोसिएशन ऑफ चाइना के अवैतनिक उपाध्यक्ष भी होने के साथ-साथ सी.पी.पी.सी.सी. के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्रीय समिति के अध्यक्ष भी हैं। उनका जन्म में सिचुआन प्रांत के कार्जे तिब्बती स्वायत्त प्रीफेक्चर में लिथांग (Ch: Litang) में फरवरी 1940 में हुआ था।

चामडो के अन्य प्रमुख अधिकारियों में लोबसांग ग्यालत्सेन, टी.ए.आर. सरकार के प्रमुख और केंद्रीय समिति के सदस्य, जम्पा फुंटसोक, नेशनल पीपुल्स कांग्रेस के उपाध्यक्ष, और पेमा चुईलिंग (पद्मा चुईलिंग) टी.ए.आर. पीपुल्स कांग्रेस के अध्यक्ष और एकमात्र जातीय तिब्बती जो 18वीं सी.सी.पी. की केंद्रीय समिति का पूर्ण सदस्य थे।

इतिहासकार और विश्लेषक क्लॉड आरपी के अनुसार, फागपाल्हा, झम्पा फुंटसोक, और पेमा चुईलिंग (पद्मा चुईलिंग) के बारे में अफवाह है कि उन्होंने शुगडेन का समर्थन किया, यह ऐसी भावना है कि जिसके बारे में दलाई लामा ने चेतावनी दी है।[121]

द्रुपखंग थुबतेन खेतुप

(चीनी में द्रुकांग थुप्डेन केल्ड्रो या झुकांग थुबतेन खेतुप के रूप में प्रसिद्ध)

वे ल्हासा में प्रशिक्षण संस्थान के प्रमुख हैं और दलाई लामा के एक प्रखर आलोचक रहे हैं।

नागचू में सन् 1955 में जन्म लेने वाले यू-त्सांग (चीनीः नाकू, टी.ए.आर.) के टी.ए.आर. के राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के उपाध्यक्ष और चाइना बौद्ध संघ के उपाध्यक्ष सहित कई आधिकारिक पदों पर आसीन हैं।

वर्ष 2019 में कम्युनिस्ट पार्टी के 70वें वर्षगांठ के समारोह जिसमें न केवल बौद्ध भिक्षुओं की आवश्यकता बल्कि सभी तिब्बत वासियों द्वारा ''14 वें दलाई लामा और दलाई गुट के मामले में जागरूक होकर स्पष्ट रेखा खींचने की आवश्यकता पर बल दिया। और दलाई गुट की विभिन्न गतिविधियों का दृढ़ता पूर्वक प्रतिरोध करना है।"

ल्योद्रे ग्यात्सो रिनपोचे

(चीनी भाषा में पांडियम डुन्यू के रूप में प्रस्तुत)

द्रुपखांग के साथ, ल्योद्रे ग्यात्सो को चीन द्वारा संस्थापित पेंचन लामा, ग्यालत्सेन नोर्बू का दाहिना हाथ माना जाता है।

वे तिब्बती बौद्ध धर्म के एडवांस्ड एकेडमिक टाइटल संबंधी निगरानी समिति के सदस्य और बुद्धिस्ट एसोसिएशन ऑफ शिगात्से के उपाध्यक्ष हैं। वर्ष 2021 में, उन्होंने चीन के पेंचन लामा की अध्यक्षता वाले चीन बौद्ध संघ की बैठक में भाग लिया। उन्हें वर्ष 2018 में 13वें सी.पी.पी.सी.सी. की राष्ट्रीय समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया।[122]

क्रियाविधि

देश में मौजूदा प्रतिबंधों और शर्तों के कारण तिब्बत में स्वतंत्र शोध लगभग असंभव है। चीनी प्राधिकारी अत्यंत दुर्लभ मामलों के अलावा विदेश शोधकर्ताओं के लिए अभिगम की अनुमति नहीं देते हैं, और तभी उन विषयों पर जो संवेदनशील नहीं हैं अथवा जिनसे ऐसे निष्कर्ष उत्पन्न होने की संभावना है जिसमें सरकार की आलोचना की गई हो, उन्हें देश में आने की अनुमति दी जाती है।

तिब्बत सीरिया और दक्षिण सूडान[123] के साथ विश्व में न्यूनतम स्वतंत्रता वाले देश की सूची में आते हैं। जबकि सी.सी.पी. तिब्बत को 'मुक्त' होने के रूप में रेखांकित करती है, इसकी पहुंच को हथियारबद्ध कर दिया है, और विद्वानों, पत्रकारों, स्वतंत्र विशेषज्ञ और विदेशी राजनयिक द्वारा आलोचना को रोकने के लिए अभिगम की अस्वीकृति का प्रयोग एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में किया जाता है। दुनिया में प्रेस स्वतंत्रता के मामले में पी.आर.सी. को सबसे खराब देशों में स्थान दिया जाता है।

तिब्बतियों पर तिब्बत में या तो तिब्बत के लोगों को या बाहर के लोगों को राजनीतिक और सामाजिक स्थिति के बारे में सूचना देने का भी संदेह होने पर गिरफ्तारी और प्रपीड़न सहित गंभीर खतरे का सामना करना पड़ता है। वी चैट जैसे ऐप के माध्यम से संचार के खतरों और कठिनाइयों का अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण किया गया है; वी चैट पर सेंसरशिप के लिए तिब्बत से संबंधित विषयवस्तु को लक्षित किया जाता है, और दलाई लामा और तिब्बती संस्कृति जिसे चीनी प्राधिकारी चीन-विरोधी होने का आरोप लगाते है, उससे संबंधित चैट संदेश, गीत और तस्वीरों को साझा करने के मामले में गिरफ्तारी हो रही है। नृजातीय चीनी को भी जोखिम का सामना करना पड़ता है यदि वे राजनीतिक रूप से संवेदनशील विषयों पर विशेष रूप से विदेशियों या गैर-सरकारी संगठनों के बारे में संप्रेषण करते हैं।

इन खतरों को देखते हुए, यह प्रतिवेदन चीनी अध्येता पत्रों और विद्वानों द्वारा प्रकाशित शोध पत्र और अनुवाद के युग्म पर आधारित है, साथ ही इसमें देश की मीडिया के आलेखों और पी.आर.सी. से बाहर के सुबुद्ध तिब्बतियों के साथ वार्तालाप पर आधारित है। या तो पी.आर.सी. में तिब्बतियों की अस्मिता या उनके परिजनों या मित्रों की पहचान अभी भी पी.आर.सी. में अनुरोध पर रोक दिया गया है। चीनी और तिब्बती दोनों भाषाओं में विभिन्न प्रकार के आधिकारिक स्रोतों जिसमें प्रान्तीय, प्रशासनिक और राष्ट्रीय वेबसाइटों, देश की मीडिया, ऑनलाइन न्यूज चैनलों सहित सभी का अध्ययन किया गया। हमने राज्य द्वारा संचालित संस्थाओं के संबंध में चीनी शिक्षाविदों द्वारा लिखित अनेक शोध पी.आर.सी. से प्राप्त किए हैं, जो सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं।

इस सूचना को प्रासंगिक बनाने के लिए और कम्युनिस्ट पार्टी की विशिष्ट शर्तों को समझने के लिए, हमने त्रिभाषी तिब्बती शोधकर्ताओं और सुविज्ञ स्रोतों (तिब्बती और अन्य) जो निर्वासित होकर अन्य देशों में रह रहे हैं, उनके साथ भी कार्य किया है। वरिष्ठ तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं और रिनपोचे से भी परामर्श किया गया ताकि धार्मिक प्रोटोकॉल के संबंध में समझ सुनिश्चित की जा सके। हम उनके समय और उनसे प्राप्त सहायता के लिए उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

Notes

All links working at date of publication, 4 October 2023.

1 https://www.chinadaily.com.cn/china/2011-03/07/content_12131293.htm

2 दलाई लामा के उत्तराधिकार की बागडोर पर दृढ़ पकड़ रखता है, न्यूयॉर्क टाइम्स, 5 अक्टूबर 2011 https://www.nytimes.com/2011/10/06/world/asia/06iht-letter06.html

3 इस रिपोर्ट में चीन द्वारा तिब्बती बौद्ध धर्म को "चीनी स्वरूप में ढालने" और दलाई वर्तमान नीति पर अधिक जानकारी के लिए, तिब्बत एडवोकेसी गठबंधन रिपोर्ट, 'असॉल्टिंग आइडेंटिटी', देखें https://tibetadvocacy.org/2021-tibet-report/

4 शन्नान म्यूनिसिपल पार्टी कमेटी यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट, शन्नान सिटी ने वर्ष 2020 में चार मानकों का अनुपालन और उन्नत भिक्षु और भिक्षुणी बनने का प्रयास' की शैक्षिक अभ्यास गतिविधियों की व्यवस्था और तैनाती पर बैठक की, 14 अप्रैल 2020. http://www.lasaribao.com/lsrbzw/pc/content/201809/06/c44947.html – पर संग्रहीत: – https://web.archive.org/web/20211215135448/http://www.lasaribao.com/lsrbzw/pc/content/201809/06/c44947.html and http://epaper.chinatibetnews.com/xzrbzw/202111/22/content_112301.html पर संग्रहीत: https://web.archive.org/web/20211215135449/http://epaper.chinatibetnews.com/xzrbzw/202111/22/content_112301.html

5 'तिब्बती राजनीतिक कैदी गंभीर पिटाई से घायल होकर मर जाता है', तिब्बत वॉच, 29 अप्रैल 2020. https://www.tibetwatch.org/news/2020/4/29/tibetan-political-prisoner-dies-of-injuries-from-severe-beating

6 चीन में पार्टी द्वारा संचालित संस्थानों में विद्वानों के शोधपत्र नीति विकास की सूचना देते हैं और आने वाले कठोर उपायों की महत्वपूर्ण चेतावनी दे सकते हैं। पी.आर.सी. से प्राप्त इस ब्रीफिंग में उद्धृत दो पत्रों में प्रथम वांग जियाक्वान सिन्हुआ, जबकि दूसरा वांग यानमिन द्वारा है और ये बीजिंग में चीन के सार्वजनिक सुरक्षा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किया गया है: दुर्दशा से बचना: वांग जियाक्वान द्वारा लिखित 'पोस्ट-दलाई एरा' में तिब्बत पर संचार के अवसरों और विचारों पर मंथन, वांग ज्याचुवांग, जिन्हुपा समाचार एजेंसी वर्ष 2009 में एक सम्मेलन में पत्र प्रस्तुत किया: https://tibetnetwork.org/free1/wp-content/uploads/2022/08/Escaping-a-predicament_-thoughts-on-the-opportunities-and-considerations-for-communicating-on-Tibet-in-the-post-Dalai-era.pdf ; वांग यानमिन द्वारा लिखित और 7 अप्रैल 2017 को चीन के सार्वजनिक सुरक्षा विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2017 में प्रकाशित 'दलाई युग के बाद तिब्बत की आजादी के खिलाफ नए परिवर्तन और विभाजनकारी गतिविधियां': https://tibetnetwork.org/free1/wp-content/uploads/2022/08/New-changes-and-countermeasures-against-Tibet-independence-splittist-activities-in-the-post-Dalai-era.pdf

7 https://tibet.net/about-cta/

8 वांग यानमिन 'पोस्ट दलाई एरा' के बीच अंतर करते हैं, कि अभी जो वर्तमान क्षण है, दलाई लामा जीवित हैं और उन्होंने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सी.टी.ए.) को राजनीतिक सत्ता सौंपी है, और 'दलाई युग के बाद', जो संदर्भित करता है उनके निधन के पश्चात की अवधि तक # लेखक का तात्पर्य है कि निर्वासन में लोकतंत्र के लिए दलाई लामा की राजनीतिक शक्ति का विचलन कमजोरी के बजाय ताकत के रूप में माना जाता है जब वह दलाई गुट की 'पीछे हटकर आगे बढ़ने' की रणनीति का उल्लेख करते हैं। https://tibetnetwork.org/free1/wp-content/uploads/2022/08/New-changes-and-countermeasures-against-Tibet-independence-splittist-activities-in-the-post-Dalai-era.pdf

9 वही, 6

10 https://tibetnetwork.org/free1/wp-content/uploads/2022/08/Escaping-a-predicament_-thoughts-on-the-opportunities-and-considerations-for-communicating-on-Tibet-in-the-post-Dalai-era.pdf

11 https://tibetnetwork.org/free1/wp-content/uploads/2022/08/New-changes-and-countermeasures-against-Tibet-independence-splittist-activities-in-the-post-Dalai-era.pdf

12 उक्त

13 उक्त 8

14 31 मार्च 2021 को प्रकाशित एक लेख में तिब्बत के एक स्रोत का हवाला देते हुए कहा गया था कि इस समूह को 12 जनवरी 202 को इकोनॉमिक्स, पॉलिटिक्स एंड पब्लिक पॉलिसी इन ईस्ट एशिया एंड द पैसिफिक में बुलाया गया था, https://www.eastasiaforum.org/2021/03/31/tibetans-in-exile-facing-new-challenges/

15 इस प्रणाली से उभरने वाली सरकार को गादेन फोडरंग (डेपुंग मठ में दलाई लामा के निवास के नाम से) कहा जाता था, और इसे गेलुग्पा के पठार, या येलो हैट, तिब्बती बौद्ध धर्म के स्कूल में मठवाद के विस्तार से मजबूत किया गया था। जो दलाई लामा से संबंधित है। उनके राजनीतिक अधिकार के हस्तांतरण के बाद गादेन फोडरंग सरकार का अस्तित्व समाप्त हो गया।

16 https://www.dalailama.com/office/the-dalai-lama-trust

17 यह वक्तव्य 24 सितंबर, 2011 को दिया गया और यह दलाई लामा की वेबसाइट https://www.dalailama.com/the-dalai-lama/biography-and-daily-life/reincarnation पर उपलब्ध है।

18 टाइम पत्रिका, 'दलाई लामा के साथ बातचीत', एलेक्स पेरी, 18 अक्टूबर, 2004

19 वर्ष 2007 में 14वें दलाई लामा ने वक्तव्य दिया था कि संभवत: अगली दलाई लामा कोई महिला भी हो सकती है, "यदि वह स्वयं को अधिक उपयोगी होने के रूप में प्रकट करती है। "द टेलीग्राफ, लंदन," दलाई लामा का कहना है कि उत्तराधिकारी कोई महिला हो सकती है। रिचर्ड स्पेंसर, 7 दिसंबर, 2001। दलाई लामा ने अक्सर नेतृत्व में महिलाओं के महत्व के बारे में बात करते हुए कहा है कि तिब्बत की संस्कृति, जो मुख्यत: तिब्बती बौद्ध धर्म पर आधारित है, इसमें सभी संतों व पुरुषों और महिलाओं सहित सभी संवेदनशील प्राणियों को बिना किसी भेदभाव के समान माना गया है। दलाई लामा के नेतृत्व में, पहली तिब्बती बौद्ध भिक्षुणियां जो बनवास में हैं, वे गेशेमा डिग्री के लिए अध्ययन करने में समर्थ हुई हैं, यह डिग्री बौद्ध दर्शन में पी. एच. डी के बराबर है। ऐसा करने वाला पहला समूह वर्ष 2016 में योग्य पाया गया।

20 जापानी समाचार एजेंसी निक्की और धर्मशाला के अन्य पत्रकारों के साथ साक्षात्कार, में यूजी कुरोनुमा द्वारा 5 नवंबर, 2018 को इसकी रिपोर्टिंग की। https://asia.nikkei.com/Editor-s-Picks/Interview/Dalai-Lama-says-high-priests-to-discuss-adult-successor. दलाई लामा विभेद करने में एक तिब्बती शिक्षक और 19वीं शताब्दी के विद्वान, जाम्यांग खेंत्से वांग्पो का उदाहरण देते हैं: "पुन: अवतार तब होता है जब पूर्व पदधारी के निधन के बाद किसी का पुनर्जन्म होता है; उद्भव तब होता है जब स्रोत के निधन के बिना ही अभिव्यक्तियां होती हैं।" दलाई लामा का इस बात पर जोर दिये जाने से पता चलता है कि वह अपनी मृत्यु से पहले किसी अन्य व्यक्ति के रूप में "उदीयमान" हो सकते हैं, और जिससे स्पष्ट रूप से उनके उत्तराधिकारी का चयन हो सके। कथन में यह भी कहा गया है कि, "वैकल्पिक रूप से लामा के लिए एक उत्तराधिकारी नियुक्त करना संभव है जो या तो उनका शिष्य हो या कोई युवा व्यक्ति हो जिसे उनका उद्भव होने के रूप में मान्यता दी जा सके।"

21 https://savetibet.org/tibetan-self-immolations/

22 https://www.dalailama.com/news/2006/tibetans-burn-wild-animal-skins-in-tibet-to-encourage-wildlife-preservation

23 https://tibet.net/14th-tibetan-religious-conference-affirms-the-dalai-lamas-sole-authority-in-his-reincarnation-illigitimises-chinas-meddling-in-religious-affairs/

24 केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ऑनलाइन, https://tibet.net/3rd-special-general-meeting-vehemently-rejects-chinas-interference-in-tibetan-reincarnation/

[25] दलाई लामा जून, 2020 में जस्टिन रॉलेट लॉट से बात कर रहे थे, जो दलाई लामा का हवाला देते हुए कहते हैं कि "तिब्बत और मंगोलिया के हिमालयी बौद्ध निर्णय करेंगे कि आगे क्या होगा", 13 जून 2020, https://www.bbc.co.uk/news/stories-53028343

[26] यह दस्तावेज, जिसे '70,000 शब्दों की याचिका' के रूप में जाना जाता है, 1997 में लंदन में तिब्बत सूचना नेटवर्क (जो अब बंद) द्वारा अंग्रेजी अनुवाद में प्रकाशित किया गया था।

[27] धर्मशाला स्थित केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सी. टी. ए) ने एक बेनामी तिब्बती अधिकारी द्वारा भूजोंग नांगटेन थंसोक (तिब्बती बौद्ध संघ) के इस वक्तव्य का ऑडियो संदेश जारी किया कि "जैद्रेल (चंद्रेल) रिनपोचे का निधन हो गया है"। "कुछ लोगों का मानना है कि जैद्रेल रिनपोचे को जहर देकर मार दिया गया था।" इस रिपोर्ट में आगे बताया गया कि ऑडियो संदेश में यह उल्लेख है। फायूल द्वारा पोस्ट किया गया, 24 नवंबर 2011, http://www.phayul.com/2011/11/24/30415/

[28] ह्यूमन राइट्स वॉच रिपोर्ट, 21 मई 2019, https://www.hrw.org/news/2019/05/21/china-free-tibetans-unjustly-imprisoned

[29] जॉन पॉवर्स के बौद्ध धर्म एवं चीनी प्रचार संबंधी अध्ययन, 'द बुद्ध पार्टी' में उद्धृत 'तिब्बत ने पेंचन लामा के राज्याभिषेक वर्षगांठ मनाया, 8 दिसंबर 2005, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017।

[30] पार्टी का अभियान, जिसका प्रभावी अभिप्राय सभी धर्मावलंबियों के लिए चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी (सी.सी.पी.) के प्रति निष्ठा को महत्व देना है, https://www.voanews.com/a/east-asia-pacific_voa-news-china_new-chinese-decree-tells-religious-leaders-support-communist-party/6205013.html

[31] https://www.nytimes.com/2010/03/02/world/asia/02tibet.html

[32] डब्ल्यूसीटीबी 中国佛协藏传佛教工作委员会 जांगचुआन फोजिअवो गौंग्जूओ, वेज्यूआन्हुई गौंग्जूओ, वेज्यूआन्हुई

[33] चीन तिब्बत ऑनलाइन, 7 अगस्त, 2019, http://eng.tibet.cn/eng/news/tibetan/201908/t20190807_6656885.html

[34] इसे जून 2019 में ल्हासा में उनके आगमन से इसकी शुरुआत हुई थी, जब देश की मीडिया ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि "11 जून को, पेंचन अर्डेनी चोस्की ग्याल्पो, चीनी पीपुल्स पॉलिटिकल कंसल्टेटिव कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय समिति की स्थायी समिति के सदस्य और चीनी बौद्ध संघ के उपाध्यक्ष अनुसंधान कार्य करने और बौद्ध गतिविधियों का संचालन हेतु विमान से ल्हासा पहुंचे।" चीन तिब्बत ऑनलाइन, 28 जून 2019, http://eng.tibet.cn/eng/news/tibetan/201906/t20190628_6623271.html

[35] चीन तिब्बत न्यूज ऑनलाइन इन चाइनीज, 28 अगस्त 2018, http://www.xztzb.gov.cn/news/1535419327828.shtml

[36] इन्टरनेशनल कम्पेन फॉर तिब्बत रिपोर्ट, 'ब्लू गोल्ड फ्रॉम द हाइस्ट प्लेटो, वाटर एंड ग्लोबल क्लाइमेट चेंज'

[37] जिन्हुआ, अगस्त, 20, 2018, इन्टरनेशनल कैम्पैन फॉर तिब्बत रिपोर्ट 11 सितंबर, 2018 में उद्धृत, http://eng.tibet.cn/eng/news/tibetan/201808/t20180820_6189684.html

[38] रॉबर्ट बर्नेट, "ऑथेंटिसिटी, सीक्रेसी, एंड पब्लिक स्पेसः चेन कुइआन एंड रिप्रेंटेटिब्स ऑफ द पेंचन लामा रिइनकार्नेशन डिसप्यूट आफॅ 1995, 2008, इन टाइबेटन मॉडर्निटीज, नोट्स फ्रॉम द फील्ड ऑन कल्चरल एण्ड सोशल चेंज, रॉबर्ट बार्नेट और रोनाल्ड स्क्वार्ज द्वारा संपादित, 353-421। लीडेनः ई.जे.ब्रिल।

[39] चाइना डेली, 26 अप्रैल 2012, https://www.chinadaily.com.cn/china/2012-04/26/content_15144030.htm

[40] पोलित ब्यूरो के तीन अन्य सदस्य क्रमशः – यू झेंगशेंग, स्थायी समिति में थे, सून चुनलान, तत्कालीन यू.एफ.डब्ल्यू.डी. के प्रमुख और ली झांशु, पार्टी के सामान्य कार्यालय के निदेशक थे); इसके साथ-साथ जम्पा फुंटसोक (उस समय पार्टी में सबसे वरिष्ठ तिब्बती) भी उपस्थित थे। देखें क्लॉड अरपी का ब्लॉग, 10 जून 2015, https://claudearpi.blogspot.com/2015/06/hot-summer-on-tibetan-plateau.html

[41] तिब्बत रिपोर्ट 'नास्तिक चीन के पहले अंतरराष्ट्रीय बौद्ध मंच की काली सूची में विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय बौद्ध', 13 अप्रैल 2006

[42] https://tibet.net/reports-of-chinese-panchen-lama-visit-to-nepal-a-political-gimmick-penpa/

[43] मई 2019 में ग्यालत्सेन नोर्बू ने थाईलैंड की अपनी पहली यात्रा की, https://tibetpolicy.net/beijing-quietly-building-gyaltsen-norbus-spiritual-resume/

[44] तिब्बत के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान द्वारा बनाए गए विनियमों का अनुवादः https://savetibet.org/new-measures-on-reincarnation-reveal-partys-objectives-of-political-control/ और https://www.cecc.gov/resources/legal-provisions/measures-on-the-management-of-the-reincarnation-of-living-buddhas-in-0

[45] ग्लोबल टाइम्स, 25 अगस्त 2019, http://www.globaltimes.cn/content/1162625.shtml

[46] ग्लोबल टाइम्स, 29 अप्रैल 2016, http://www.globaltimes.cn/content/980724.shtml

[47] https://www.cngold.com.cn/20160429d1903n68999550.html जनवरी 2016.

[48] चीनी श्वेत पत्र, 21 मई, 2021 को जारीः http://www.xinhuanet.com/english/2021-05/21/c_139959978.htm

[49] इससे पहले सन् 2021 में सिचुआन चीनी बौद्ध संघ ने प्रांत में आधिकारिक तौर पर स्वीकृत 411 पुनर्जन्म लामाओं की सूची अपलोड की, जिसमें यह कहा गया था कि इन प्रविष्टियों में गाबा, एम्डो (चीनीः अबा, तिब्बती और कियांग स्वायत्त प्रान्त) में 119 पुनर्जन्म जीवित बौद्ध शामिल थे; कर्देज, खाम 291 जीवित बौद्ध (चीनी गंजी, टी.ए.आर.) और एक मुली तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र में। पूरी सूची ऑनलाइन हैः http://www.sctyzx.gov.cn/sczcfjhfml/ और 5 फरवरी 2021 को सिचुआन सरकार की वेबसाइट पर प्रदर्शित की गई, http://www.sichuanpeace.gov.cn/sfzjzs/20210205/2384974.html

[50] अरजिया रिनपोचे और कर्मापा दोनों द्वारा तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता के अभाव के बारे में अपने वनवास में रहने दौरान बयान जारी किये जाने के बाद भी चीनी सरकार ने इन दोनों के पलायन की आलोचना में कोई कटु वक्तव्य जारी नहीं किए। भूतपूर्व अध्यक्ष और पार्टी सचिव जियांग जेमिन ने अरजिया रिनपोचे के पलायन के बाद उनके घर लौटने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उनकी प्रशंसा में एक कविता भी लिखी। चीनी अधिकारियों ने पलायन करने वाले कर्मपा से संप्रेषण स्थापित करने का विवेकपूर्ण प्रयास निरंतर जारी रखा, भारत में उनके आगमन के पश्चात उन्हें स्वदेश वापसी के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इन प्रयासों को जारी रखा गया।

[51] 2019 में उप निदेशक लियू पेंग द्वारा लेख।

[52] ह्यूमन राइट्स वॉच द्वारा की गई घोषणा का अनुवाद, https://www.hrw.org/news/2018/01/25/china-new-controls-tibetan-monastery

[53] 'चीन ने तिब्बती कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख के लिए अपने सबसे स्वीकृत अधिकारी को बढ़ावा दिया', साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट, 19 अक्टूबर 2021, https://www.scmp.com/news/china/politics/article/3152821/china-promotes-its-most-sanctioned-official-tibetan-party-chief

[54] 'वांग जुन्झेंग, 'शिनजियांग के कसाई,' तिब्बत के पार्टी सचिव बने'। बिटर विंटर, 21 अक्टूबर 2022, https://bitterwinter.org/wang-junzheng-butcher-of-xinjiang-becomes-party-secretary-of-tibet/

[55] 'मार्च की वर्षगांठ से पहले चीन ने तिब्बती भिक्षुओं को चेतावनी दी', रेडियो फ्री एशिया, 18 फरवरी 2022, https://www.rfa.org/english/news/tibet/warns-02182022152247.html

[56] 'तिब्बत की धार्मिक नीति का 'जहरीला फल' जैसा कि चीन ने 'लिविंग बुद्धा' डेटाबेस, तिब्बत के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान प्रकाशित किया, 2 मई 2016, https://savetibet.org/the-poisonous-fruit-of-tibets-religious-policy-as-china-publishes-living-buddha-database/

[57] 'तिब्बती 'लिविंग बुद्धा' को माओत्से तुंग के जन्मस्थान पर ने पार्टी के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए मजबूर किया, तिब्बत के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान, 8 नवंबर 2016, https://savetibet.org/ict-inside-tibet-news-and-analysis-of-emerging-developments-in-tibet/#1

[58] निर्वासन में तिब्बतियों के अनुसार क्षेत्र से संबंध है।

[59] ह्यूमन राइट्स वॉच, 6 अप्रैल 2022, https://www.hrw.org/news/2022/04/06/how-chinas-authorities-aim-control-tibetan-reincarnation

[60] एक धार्मिक मंच पर शि-जिनपिंग की टिप्पणी के बाद, सन् 2016 में पुनर्जन्म लामाओं के लिए एक प्रशिक्षण सत्र पर चीनी राज्य मीडिया की रिपोर्ट, 14 नवंबर 2016, http://www.cnr.cn/xz/jrxz/20161114/t20161114_523265639.shtml।

[61] https://www.chinavitae.com/biography/Zhu_Weiqun

[62] चीनी राज्य मीडिया रिपोर्ट, 9 मई 2020, http://www.qhtyzx.com/system/2020/05/09/013157687.shtml

[63] चीनी राज्य मीडिया, चीन तिब्बत नेट, 20 सितंबर, 2020, http://www.tibetology.ac.cn/zgzx/xsdt/detail/1319124 पर संग्रहीत: https://archive.vn/6xk4N

[64] चीनी राज्य मीडिया, 2 फरवरी 2021, http://zf.xgll.gov.cn/html/2021/zf_zfjg_zs_szlsg_gzdt_0202/34422.html पर संग्रहीत:https://archive.vn/yotja

[65] "चाइना नेशनल डेली", 12 जनवरी 2021, http://www.mzb.com.cn/html/report/210130794-1.htm

[66] चीनी श्वेत पत्र, 21 मई 2021 को जारी, http://www.xinhuanet.com/english/2021-05/21/c_139959978.htm

[67] किन्हाई सरकार की वेबसाइट: http://www.qh.gov.cn/zwgk/system/2021/06/10/010025515.shtml

[68] https://freetibet.org/freedom-for-tibet/culture-religion/yarchen-gar/

[69] http://www.gxscse.com/xinwenshuju/550603.html

[70] 14 अप्रैल 2015 को चीन ने तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र की पीपुल्स कांग्रेस के पांच सदस्यों द्वारा गठित एक प्रतिनिधिमंडल को अमेरिका भेजा, जिसका नेतृत्व तिब्बती बौद्ध धर्म में 'जीवित बुद्ध का पुनर्जन्म', स्थायी समिति और तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र की पीपुल्स कांग्रेस समिति के उप निदेशक शांषा तेनजिन चुईदक, ने की। उन्होंने 2008 में ल्हासा विरोध और दलाई लामा के संबंध में चीनी सरकार की स्थिति को दोहराया, और चीनी राज्य मीडिया के अनुसार "तिब्बत के 50 वर्षों में तेजी से सामाजिक आर्थिक विकास और मानवाधिकार की स्थिति का परिचय दिया और अमेरिकी राजनेताओं अमेरिका में स्थित निर्वासित तिब्बती समुदायों के नेताओं ने भी तिब्बत से तिब्बती प्रतिनिधिमंडल की यात्रा का स्वागत किया" http://www.tibetol.cn/html/2015/1_0414/17915.html

[71] तिब्बत रिपोर्ट के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान, 2 दिसंबर 2009, https://savetibet.org/determination-to-resist-repression-continues-in-combat-ready-chamdo-frontline-of-patriotic-education/

[72] अंग्रेजी उपशीर्षक के साथ मठ के वीडियो, खाम फिल्म प्रोजेक्ट यहां देखें: http://www.khamfilmproject.org/sershul-tib/ तिब्बत रिपोर्ट के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान द्वारा उद्धृत 12 जुलाई 2018, https://savetibet.org/china-forces-young-tibetan-monks-out-of-monastery-into-government-run-schools-as-part-of-drive-to-replace-monastic-education-with-political-propaganda/

[73] ग्लोबल टाइम्स, 15 मई 2018, http://www.globaltimes.cn/content/1102208.shtml

[74] https://www.nytimes.com/2012/04/08/world/asia/china-said-to-detain-returning-tibetan-pilgrims.html

[75] देखें तिब्बत रिपोर्ट के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान, 'तिब्बतियों को विमुख करने वाली नीति: चीन के सख्त नियंत्रण में तिब्बतियों को पासपोर्ट से इनकार', https://savetibet.org/policy-alienating-tibetans-denial-passports-tibetans-china-intensifies-control/ और ह्यूमन राइट्स वॉच, 'वन पासपोर्ट, टू सिस्टम्स' https://www.hrw.org/report/2015/07/13/one-passport-two-systems/chinas-restrictions-foreign-travel-tibetans-and-others

[76] तिब्बत रिपोर्ट के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान, के लेखक के साथ साक्षात्कार, 9 जनवरी 2017, https://savetibet.org/tibetan-pilgrims-compelled-to-return-from-dalai-lama-teaching-in-bodh-gaya-india-china-calls-the-teaching-illegal/

[77] चीन की विश्वास कूटनीति पर एक पत्र में डॉ जुआन झांग के अनुसार, यह अहसास था कि "चीनी बौद्ध धर्म का दुनिया में थेरवाद बौद्ध धर्म और तिब्बती बौद्ध धर्म की तुलना में बहुत कम प्रभाव था" जुआन झांग (2013), चीन की आस्था कूटनीति, फिलिप सेब (सं.), धर्म और सार्वजनिक कूटनीति, न्यूयॉर्क, एन.वाई: पालग्रेव मैकमिलन, पी 75-98.

[78] द इंडियन रिपब्लिक न्यूज पोर्टल, नया मानचित्र अरुणाचल को चीन अपने हिस्से के रूप में दिखाता है, 28 जून, 2014

[79] इंडिया टुडे, 31 दिसंबर 2021, https://www.indiatoday.in/india/story/china-renames-15-places-arunachal-pradesh-india-rejects-invented-names-1894377-2021-12-31

[80] मैथ्यू एकेस्टर, फाउंडेशन फॉर नॉन-वायलेंट अल्टरनेटिव्स के लिए प्रस्तुति, दिल्ली, 13 सितंबर 2021, https://www.youtube.com/watch?v=9ZX7eTqrTJs

[81] चीनी विदेश मंत्रालय, लिंक अब काम नहीं कर रहा है, सीएनएन द्वारा उद्धृत, 6 अप्रैल 2017, https://edition.cnn.com/2017/04/05/asia/china-tibet-dalai-lama-border/index.html

[82] आगे की मुहिम में: – 2009 दलाई लामा की यात्रा से संबंधित: # – 2016 भारत में तत्कालीन अमेरिकी राजदूत रिचर्ड वर्मा द्वारा तवांग की यात्रा और भारतीय राज्य के पश्चिम से बौद्ध मोनपा के अनुरोध पर 2016 में 17वें कर्मपा ओजीन ट्रिनली दोरजे के यात्रा पर भी आपत्ति जताई गई।

[83] शेरिंग चोंझुम भूटिया, 20 अप्रैल 2017, https://thediplomat.com/2017/04/the-politics-of-reincarnation-india-china-and-tibet/

[84] उनके वसीयतनामा 'वर्ड फॉर ऑल द फेथफुल' (टिबेटिन: डैड रिस कुन ला टैम) और बटैसइन, ओ. 2015 IX बोग्ड जावजांडबा हुटेज: एमिड्रल बा साग हुग्तासा (द IX बोग्डो जेसुन धम्पा खुटुखु: द लाइफ ऑफ टाइम्स), उलानबत्तर: मोनहिन यूसेज

[85] द्वारा उद्धृत http://thecessblog.com/2018/02/double-headed-mongolian-buddhism-by-lhagvademchig-j-shastri-visiting-researcher-university-of-shiga-prefecture/#_edn4 और अन्य स्रोत

[86] और अन्य स्रोतप्रेस को कवर करने वाला लिंग दलाईलामा.कॉम के बारे में एक लिंक ऑफलाइन प्रकाशित हुआ (https://www.dalailama.com/news/post/1496-meeting-with-the-press-before-returning-to-japan – और तिब्बती भाषा में https://www.gyalwarinpoche.com/node/309)

[87] 'रूस मंगोलिया के अधिक नजदीक क्यों जा रहा है?'

[88] http://blogs.ubc.ca/mongolia/2020/guest-post-dalai-lama-succession-mongolia-tibet-china-shugden/ यह भी देखें

[89] 26 दिसंबर 2016 को मंगोलियाई प्रेस में लेख https://dnn.mn/%D1%86-%D0%BC%D3%A9%D0%BD%D1%85-%D0%BE%D1%80%D0%B3%D0%B8%D0%BB-%D1%81%D0%B0%D0%BB%D0%B1%D0%B0%D1%80-%D1%85%D1%8D%D0%BC%D0%BD%D1%8D%D0%BB%D1%82%D0%B8%D0%B9%D0%BD-%D0%B3%D0%BE%D1%80%D0%B8%D0%BC%D0%B4-%D1%88%D0%B8%D0%BB%D0%B6%D0%B8%D0%B6-%D0%B1%D0%B0%D0%B9%D0%BD%D0%B0/

[90] दोनों लिंक, जिचांग लुलु फॉर हिज पीस आउटसाइड द अर्न' द्वारा उद्धृत https://theasiadialogue.com/2017/03/21/thinking-outside-the-urn-china-and-the-reincarnation-of-mongolias-highest-lama/, लिखने के समय ऑफलाइन थे।

[91] 'मंगोलिया: लिविंग फ्रॉम लोन टू लोन', फाइनेंशियल टाइम्स, 12 सितंबर 2016, https://www.ft.com/content/4055d944-78cd-11e6-a0c6-39e2633162d5

[92] तिब्बत जर्नल, 7 मार्च 2022, https://www.tibetanjournal.com/?s=mongolia

[93] ब्रिटिश बौद्ध धर्मावलंबी न्यू रेलीजियस मूवमेंट (एन.आर.एम), द्वारा विरोध प्रदर्शनों का आयोजन और इसका प्रचार-प्रसार किया गया, 'न्यू कदम्पा ट्रेडिशन' (एन.के.टी), 'इंटरनेशनल शुगडेन कम्युनिटी (आईएससी)' उपनाम के अंतर्गत एक पंजीकृत परमार्थ संस्था, द न्यू कदम्प ट्रेडिशन (New Kadampa Tradition), अब पश्चिम में सबसे तेजी से बढ़ने वाला आंदोलन था, जिसमें 200 से अधिक केंद्र और पूरे विश्वभर में इसकी 900 शाखाएं थी। इस समूह के यूनाइटेड किंगडम में 48 केंद्र हैं। अपनी आक्रामक भर्ती और तेजी से विस्तार के लिए प्रसिद्ध, एन.के.टी. को सर्वाधिक विवादास्पद से न्यू रेलीजियस मूवमेंट (एन.आर.एम.) के मध्य भी माना जाता है और यूनाइटेड किंगडम में कई संसदीय प्रश्नों का विषय रहा है।

[94] रॉयटर्स, 16 मार्च 2016, https://www.reuters.com/article/us-china-dalai-lama-idUSKCN0WD203 and investigation, 21 December 2015, https://www.reuters.com/investigates/special-report/china-dalailama/

[95] http://www.savetibet.org/chinas-new-directive-on-controversial-shugden-spirit-in-tibet-in-bid-to-further-discredit-dalai-lama/#sthash.sP2FfXYs.dpuf

[96] 2015 में 21 दिसंबर 2015 को वीडियो साक्ष्य के बाद लामा त्सेटा के साथ रॉयटर्स का साक्षात्कार, https://www.reuters.com/investigates/special-report/china-dalailama/

[97] चाम्डो स्थित एक छोटे से बौद्ध मठ में कुल 21 बौद्ध भिक्षुओं को जबरन बाहर निकाल दिया गया जब उन्होंने डोर्जे शुगडेन की प्रतिमा संस्थापित करने से इनकार कर दिया था। तिब्बती सूत्रों के अनुसार, उसके बाद प्राधिकारियों ने आठ अन्य बौद्ध भिक्षुओं को नियुक्त किया और प्रतिमा संस्थापित की गई। गत वर्ष चाम्डो में भी, एक युवा तिब्बती ने स्वयं को चाकू मारकर अपनी जान दे दी, जब पुलिस ने उसे छह वर्ष पूर्व शुगडेन की एक प्रतिमा को विरूपित करने के मामले में उसे हिरासत में लेने का प्रयास किया था। यह रिपोर्ट रेडियो फ्री एशिया द्वारा प्रसारित की गई थी। और अधिक जानकारी इन्टरनेशनल कैम्पैन फॉर तिब्बत रिपोर्ट के स्रोत में दी गई है। http://www.savetibet.org/chinas-new-directive-on-controversial-shugden-spirit-in-tibet-in-bid-to-further-discredit-dalai-lama/#sthash.sP2FfXYs.dpuf शुगडेन के बारे में अधिक जानकारी दलाई लामा की वेबसाइट (www.dalailama.com), केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन (www.tibet.net), और तिब्बत हाउस (www.dalailamaprotesters.info/) पर उपलब्ध है।

[98] चीनी मीडिया के अनुसार, मार्च 2017 में, चीन ने नेपाल निवेश शिखर सम्मेलन में प्राप्त 13.52 बिलियन डॉलर में से हिमालयी देश में 8.2 बिलियन डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश किया। इसी ग्लोबल टाइम्स के आलेख में लिखा गया किः ''चीनी परिदान में उसी घटना में भारत की 317 मिलियन डॉलर की प्रतिबद्धता से आगे की बात की गई।'' ग्लोबल टाइम्स, 14 अगस्त 2017, http://www.globaltimes.cn/content/1061315.shtml इसके अलावा चीन ने नेपाल की सीमा से सटे तिब्बती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर अरबों डॉलर खर्च किए हैं। (देखेंः निक्केई एशियन रिव्यू, 9 मार्च 2019,https://asia.nikkei.com/Spotlight/Belt-and-Road/Belt-and-Road-reaches-Nepal-s-wild-north-winning-China-influence).

[99] तिब्बत के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान द्वारा उद्धृत, 11 नवंबर 2019, https://savetibet.org/concerns-rise-about-tibetans-status-in-nepal-as-chinese-leader-xi-jinping-prepares-to-visit/ शक्ति को मजबूत करने के लिए एक खाका' चीन द्वारा नेपाल को शी जिनपिंग थॉट का निर्यात, काठमांडू पोस्ट, 24 सितंबर 2019 https://kathmandupost.com/national/2019/09/24/a-blueprint-for-consolidating-power-china-exports-xi-jinping-thought-to-nepal'

[100] ''चीन-भारत सीमा विवाद के बीच चीन द्वारा नेपाल को अधिक उदार सहायता प्रदान करनी चाहिए'', ग्लोबल टाइम्स, 14 अगस्त 2017 http://www.globaltimes.cn/content/1061315.shtml

[101] इंटरनेशनल कैम्पेन फॉर तिब्बत सीरीज ऑफ रिपोर्ट्स ऑन डेवलपमेंट इन नेपाल 'डेन्जर्स क्रॉसिंग', https://savetibet.org/tag/dangerous-crossing/

[102] केंद्रीय तिब्बती प्रशासन, 'ओओटी नेपाल प्रतिबंधों के बावजूद धर्मगुरु दलाई लामा का 87वां जन्मदिन मना रहा है' 8 जुलाई 2022: https://tibet.net/oot-nepal-celebrates-the-87th-birthday-of-his-holiness-the-dalai-lama-despite-restrictions/

[103] 'तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम 2019', https://savetibet.org/wp-content/uploads/2020/01/BILLS-116-HR4331-E000179-Amdt-95.pdf

[104] तिब्बत नीति अधिनियम: https://www.congress.gov/bill/116th-congress/house-bill/4331/text?format=txt&r=3&s=

[105] तिब्बत के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान द्वारा तिब्बत नीति अधिनियम के चर्चा बिंदु, https://savetibet.org/advocacy/tibetan-policy-act/tibetan-policy-act-talking-points/

[106] 3 अप्रैल 2020 को जोसेफ बोरेल, यूरोपीय संघ के विदेश मामलों के प्रमुख और यूरोपीय आयोग के उपाध्यक्ष द्वारा आश्वासन दिया गया https://savetibet.org/eu-opposes-chinese-interference-in-dalai-lama-succession//

[107] तिब्बती समीक्षा, 11 अप्रैल 2020, तिबेतन रिव्यू, 11 अप्रैल 20200, https://www.tibetanreview.net/eu-reaffirms-opposition-to-chinas-interference-in-dalai-lama-reincarnation-issue/

[108] https://www.consilium.europa.eu/uedocs/cms_data/docs/pressdata/EN/foraff/137585.pdf

[109] https://www.lachambre.be/doc/CCRI/pdf/55/ic091.pdf

[110] https://www.parlementairemonitor.nl/9353000/1/j9vvij5epmj1ey0/vl3rj06x72zt

[111] https://dserver.bundestag.de/btd/19/174/1917407.pdf p 25, तिब्बत के लिए अन्तरराष्ट्रीय अभियान द्वारा उद्धृत, 11 अप्रैल 2020 https://savetibet.org/german-and-eu-leaders-back-tibet-access-religious-freedom/

[112] ''भारत बौद्ध धर्म के चीन या भविष्य पर नहीं छोड़ सकता,'' टिप्पणीकार इंद्राणी बागची ने स्रोत का हवाला दिया।

[113] विदेश नीति टिप्पणीकार इंद्राणी बागची ने बताया – ''यह पहली बार नहीं है जब मोदी ने दलाई लामा को शुभकामनाएं दी हैं। दरअसल, अधिकारियों के अनुसार, मोदी ने प्रत्येक वर्ष उनका अभिवादन किया है। किन्तु पहली बार इसे सार्वजनिक किया गया है। यह भारत और चीन के बीच अब तक सबसे खराब सैन्य गतिरोध के मध्य प्रमुखता से आया है, जिस टकराव में भारत की विदेश और रणनीतिक नीतियों की दीर्घावधि रूपरेखा को बदल दिया है। टाइम्स ऑफ इंडिया, 12 जुलाई 2021, https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/globespotting/india-should-declare-support-for-dalai-lamas-reincarnation-as-the-spiritual-leader-directs-it/ अमिताभ माथुर ने टिप्पणी करते हुए कहा कि बहुत सी उत्तरोत्तर कार्रवाई में से एक जिससे दोहरे प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है, पहला चीनियों पर दबाव बिंदु के रूप में और तिब्बतियों के बीच गलतफहमी को दूर करने के दोहरे उद्देश्य के साथ-साथ दलाई लामा के संदर्भ में भारत सरकार के लिए उनकी पब्लिक प्रोफाइल में अभिवृद्धि कर इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी ने यह जानकारी देते हुए ट्वीट किया कि उन्होंने दलाई लामा से बात की है और उन्हें जन्मदिन की बधाई दी है, एक स्वागत योग्य कदम है। यह न केवल चीन लिए जनता का संकेत है बल्कि निर्वासित तिब्बती समुदाय के लिए भी संकेत है कि भारत उनके मुद्दों के प्रति निरंतर प्रतिबद्ध है। हालांकि, कुछ और सुसंगत कदम उठाए जाने की जरूरत है।''

[114] https://secureservercdn.net/198.71.233.163/4vo.170.myftpupload.com/wp-content/uploads/2020/12/TPSA-bill-text-from-consolidated-spending-bill.pdf

[115] उल्लिखित आंकड़े मूल रूप से इतिहासकार और तिब्बत विशेषज्ञ क्लॉड अरपी द्वारा 24 मार्च 2019 को पोस्ट किए गए एक ब्लॉग में पहचाने गए थे, https://claudearpi.blogspot.com/2019/03/the-lamas-who-will-select-chinese-15th.html

[116] ऐसी खबरें थीं कि मठ में तनाव के संकेत पर आठ बौद्ध भिक्षुओं को गिरफ्तार किया गया। स्रोत एक तिब्बत सूचना नेटवर्क रिपोर्ट है जिसे टी.आई.एन. के बंद होने के बाद अब ऑफलाइन कर दिया गया है। तिब्बत के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियान 'व्हेन द स्काई फेल टू अर्थ', द्वारा उद्धृत, https://savetibet.org/wp-content/uploads/2013/01/2004ReligionReport.pdf

[117] क्लाउड अरपी ब्लॉग, 30 जनवरी 2013, https://claudearpi.blogspot.com/2013/01/reting-and-dalai-lamas-reincarnations.html

[118] क्लाउड अरपी ने इस ब्लॉग के लिए साक्षात्कार, जिसे 29 सितंबर, 2015 को पोस्ट कियाः http://www.tibet.cn/cn/culture/zx/202201/t20220107_7126858.html

[119] क्लाउड अरपी ने इस ब्लॉग के लिए साक्षात्कार, जिसे 29 सितंबर, 2015 को पोस्ट कियाः https://claudearpi.blogspot.com/2015/09/amchok-rinpoche-karma-of-tibet.html

[120] उक्त।

[121] https://claudearpi.blogspot.com/2019/03/the-lamas-who-will-select-chinese-15th.html

[122] 4 सितंबर 2016 को चाइना बुद्धिस्ट एसोसिएशन की यह रिपोर्ट, देखेंः https://www.chinabuddhism.com.cn/xw/yw1/2016-09-04/11380.html

[123] https://freedomhouse.org/country/tibet/freedom-world/2022

संदर्भ

अंतर्राष्ट्रीय तिब्बत नेटवर्क तिब्बत से संबंधित गैर-सरकारी संगठनों का एक वैश्विक गठबंधन है। इसका उद्देश्य तिब्बत आंदोलन को विश्व स्तर पर अधिकतम प्रभावशील बनाना है। नेटवर्क का कार्य व्यक्तिगत सदस्य संगठनों की क्षमता बढ़ाना, समन्वित रणनीतिक अभियान विकसित करना और संगठनों के बीच बढ़ते सहयोग को प्रोत्साहित करना है, जिससे तिब्बत आंदोलन को समग्र रूप से मजबूत किया जा सके।

नेटवर्क के सदस्य तिब्बती संघर्ष के मौलिक सिद्धांत अहिंसा के प्रति प्रतिबद्ध हैं। वे तिब्बत को एक कब्जे वाले देश के रूप में मानते हैं और निर्वासन में तिब्बती सरकार को तिब्बती लोगों की एकमात्र वैध सरकार के रूप में मानते हैं। इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय तिब्बत नेटवर्क तिब्बत की भविष्य की राजनीतिक स्थिति के लिए अपने सदस्य संगठनों के विचारों और सुझावों की विविधता का सम्मान करता है, और मानता है कि विविधता हमारे आंदोलन को मजबूत करती है।

TibetNetwork.org

भौगोलिक टिप्पणी: 'तिब्बत' अमदो, खाम और यू-त्सांग, तीन पारंपरिक तिब्बती प्रांतों को संदर्भित करता है। 1960 के दशक में, चीन ने तिब्बत को दो भागों में विभाजित कर दिया है- तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र (टी.ए.आर.), और तिब्बती स्वायत्त प्रान्त जिसमें क्विंघाई, गांसु, सिचुआन और युन्नान प्रांत सम्मिलित हैं। जब भी चीनी सरकार तिब्बत का संदर्भ देती है, तो वह टी.ए.आर. का जिक्र करती है।

आवरण तस्वीर: 13 सितंबर 2010 को परम पावन दलाई लामा लेह, लद्दाख में बाढ़ पीड़ितों के लिए एक सार्वजनिक प्रार्थना सभा में। तेनजिन छोजोर/परम पावन दलाई लामा का कार्यालय।